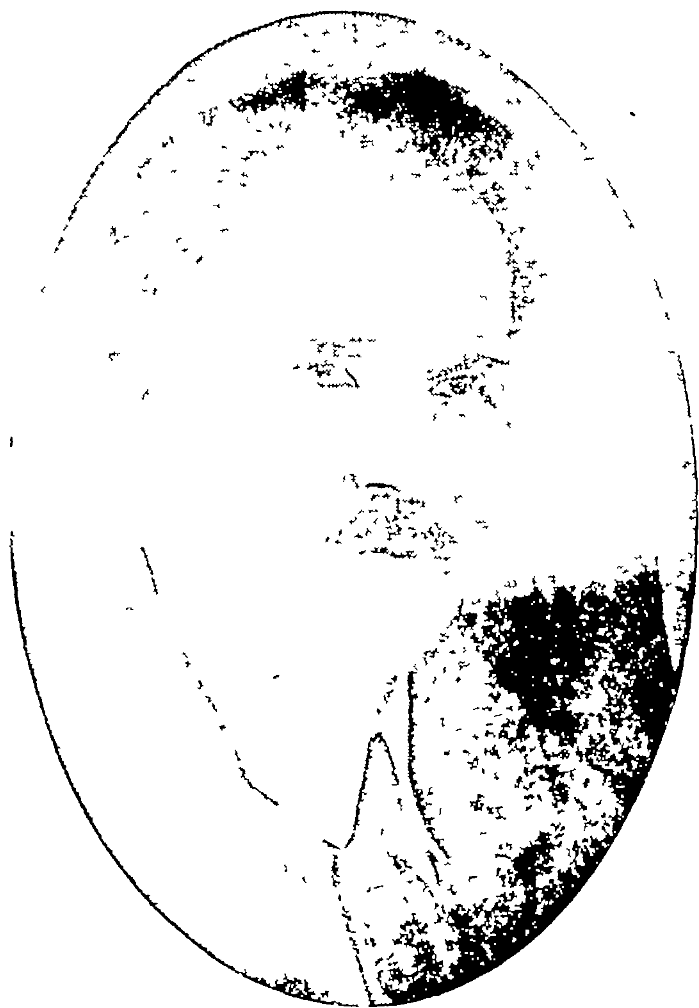
प्रथम सस्करण

सम्वत् २०१७

मुद्रक

नेशनल प्रिंटिंग प्रेस

जयपुर



अलेक्सेई पेत्रोविच वारान्निकोव

समर्पण

रामचरितमानस का रूसी भाषा में अनुवाद कर हमारे साहित्यिक
और सांस्कृतिक सम्बन्धो को सुदृढ करने वाले
राष्ट्रभाषा हिन्दी के मेधावी विद्वान
रूस की भूमि पर भी जिनकी समाधि आज भारत
की मिट्टी एव पत्र पुष्पो से अर्चित है
भारत और भारतीयता के अमर प्रेमी
अलेक्सै पेत्रोविच बारान्निकोव
की पवित्र स्मृति को
सादर समर्पित

'राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति

के

उन्नायक

लोकनायक श्री जयनारायणजी व्यास

की

शुभ कामना

'राजस्थानी दोहा संग्रह' पढा । वैसे यह संग्रह केवल संग्रह हैं, परशृंगार और वीर रस दूहो के रूप मे जिस प्रकार संगृहीत किया गया है उससे इसमे न केवल राजस्थान के साहित्यिक वैभव का समुचित प्रदर्शन होता है बल्कि उदात्त भावनाओ द्वारा हीन वासनाओ पर विजय प्राप्त होती है। शृंगार को शुद्ध ही नही, उच्च बनाने का जो प्रयास राजस्थानी मे पाया जाता है वैसा प्रयास किसी और भाषा मे शायद ही हो।

महिला समाज की जौहर तक की तैयारी बिना प्रेरणा की पृष्ठभूमि के असभव है। यह प्रेरणा उस प्राचीन साहित्य मे मिलती है जिसका सग्रह 'राजस्थानी दोहा सग्रह है। इस संग्रह

का प्रकाशन वास्तव मे राजस्थानी समाज की एक अपूर्व सेवा है जिसके लिए समाज का बहन लक्ष्मीकुमारी का आभारी होना चाहिये।

हाथा मे हथियार, गाहडमल बाधै घणा।
भारत पडिया भार, कोई क झेलै किसनिया॥

उसी तरह स्मृति और लेखिनी सबके पास हैं, पर बहुत थोडे नर और नारी उसका देशहित के लिए उपयोग करते हैं। यह सग्रह ऐसे ही उद्योगो मे से एक है, ऐसी मेरी मान्यता है।

जयनारायण व्यास

प्रस्तावना

वास्तव में दूहे को राजस्थान का तो हृदय या जीवन ही कहना चाहिये। शिक्षित, अशिक्षित, वाल, वृद्ध, नर और नारी सव की जिव्हा पर कहावतो और मुहाविरो की तरह आप दूहे का प्रचलन पायेंगे। वृद्ध जन जव सीख की वात कहते हैं तो अपने कथन की प्रामाणिकता में अवश्य ही दो तीन दूहे कह देते हैं। दुलहा और दुलहन के प्रेम सवाद तो दूहो से लवालव भरे होते हैं। इनके प्रेम पत्रो को तो छोटे मोटे दूहा सग्रह कहना ही उचित होगा। विवाह के मागलिक अवसर पर वृद्धायें दुलहा से मिलती हैं तब उससे दूहा सुनाने का आग्रह करती हैं और दुलहन की सहेलियो और सालियो से तो दूहा सुनायें बिना पिड छुडाना ही कठिन हो जाता है। कुछ सुधारवादियो ने दूहे का स्थान श्लोक को देकर मागलिक अवसरो की सरसता को कम कर दिया है। हाँ, स्त्री समाज ने तो श्लोक का मतलव भी दूहा ही समझ रखा है। अशिक्षित ही नही शिक्षित एवं महत्वपूर्ण परिवारो मे जव महिलायें वर से श्लोक वोलने को कहती हैं तव वह दूहे ही सुनाता है। मारवाड की विख्यात 'माड' राग दूहो मे ही गाई जाती है। राजस्थान का स्नेह

प्रेम, वीरत्व और वैराग्य इस छोटे से छन्द मे केन्द्रित हैं। इसे सुनते और सुनाते समय ऐसा अनुभव होता है, जैसे यह कोई मानवी रचना नही बल्कि निसर्ग की ही देन है। सिंह की गम्भीर गर्जना, हरी भरी उपत्यका और सुन्दरी स्त्री की तरह दूहे की दिव्य वाणी भी नैसर्गिक सृष्टि सी जान पडती हैं। यह दो पंक्तियो का छन्द राजस्थान के तो हृदय और जीवन का ओजस्वी प्रतिनिधि है, इसीलिये कवियो ने इसको इतना महत्व दिया है।

दूहो दसमो वेद समझे तेने साळे।
वियातळ नी वेण्य वाझणी शु जाणे॥
दूहो चित चक्कित करै दूहो चित रो चैन।
दूहो दरद उपावही दूहो दारू ऐन॥
सोरठियो दूहो भलो भल मरवण री वात।
जोवन छाई धण भली तारा छाई रात॥

हिन्दी मे इसे दोहा कहते हैं और राजस्थानी मे दूहा। सोरठे को राजस्थानी मे सोरठिया दूहा कहते हैं। सौराष्ट्र या सोरठ से इसका प्रचलन हुआ इसीलिए इसको यह नाम दे दिया गया। सोरठ नाम की एक प्रेमिका भी लोक-कथाओ मे बहुत मशहूर है। राजस्थानी साहित्य संसार मे दूहा एकच्छत्र सम्राट है। यहाँ के प्रेमाख्यान और वीर-गाथायें इसके बिना प्राणहीन हो जाती हैं। पुरातन हस्तलिखित पुस्तको मे और लोगो की जिव्हा पर ये लाखो की संख्या मे मिलते हैं। इस काव्यामृत के स्रष्टा दूहाकारो में से बडी कठिनाई से करीब क़रीब दो तीन

दर्जन के ही नाम ज्ञात हैं। इन अज्ञात कलाकारो के महान बलिदान से ही शायद दूहा इतना क्षमताशाली हो गया है। मानव हृदय को वाणी देने वाले इन ज्ञात एव अज्ञात कवियो की काव्य साधना ने राजस्थानी साहित्य को तो सदा के लिए अमर बना दिया

प्रस्तुत संग्रह मे अपभ्रशकालीन राजस्थानी से लेकर वर्तमान राजस्थानी तक के दूहो की बानगी मिलेगी। विभिन्न विषयो के दूहो से पहले शीर्षक तो नही दिये हैं पर विषयक्रम का ध्यान पूरी तरह रखा गया हैं। इस सग्रह के अधिकतर दूहे बहुत ही जनप्रिय हैं और राजस्थान निवासियो की जिन्हा पर ही मिलेंगे। इसलिए अन्य प्रान्त वालो को तो राजस्थान की जीवन-प्रणाली, मनोदशा और आदर्श का कवित्वपूर्ण सुन्दर परिचय प्राप्त कर बडी प्रसन्नता होगी ही पर राजस्थान निवासियो के लिए तो यह विशेष प्रेरणाप्रद प्रयत्न हैं।

राजस्थानी तथा सस्कृत साहित्य की यह बात अवश्य उल्लेखनीय है कि हमारे पूर्वज पृथ्वी को मातृत्व की नही पत्नीत्व की भावना से देखते थे। श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन के सामने एक तरफ स्वर्गानन्द की कल्पना रखी और दूसरी तरफ भूमि को भोगने का आकर्षण,

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय, युद्धाय कृतनिश्चय. ॥

हे अर्जुन, दृढ निश्चय के साथ युद्ध के लिए खडे हो जाओ। यदि तुम वीर गति को प्राप्त हो गए तो स्वर्ग में आनन्द करोगे और विजयी हुए तो पृथ्वी को भोगोगे।

प्रेम, वीरत्व और वैराग्य इस छोटे से छन्द मे केन्द्रित हैं। इसे सुनते और सुनाते समय ऐसा अनुभव होता है, जैसे यह कोई मानवी रचना नही बल्कि निसर्ग की ही देन है। सिंह की गम्भीर गर्जना, हरी भरी उपत्यका और सुन्दरी स्त्री की तरह दूहे की दिव्य वाणी भी नैसर्गिक सृष्टि सी जान पडती है। यह दो पंक्तियो का छन्द राजस्थान के तो हृदय और जीवन का ओजस्वी प्रतिनिधि है, इसीलिये कवियो ने इसको इतना महत्व दिया है।

दूहो दसमो वेद समझे तेने साळे ।
वियातळ नी वेण्य वाझणी शु जाणे ।।
दूहो चित चक्रित करै दूहो चित रो चैन ।
दूहो दरद उपावही दूहो दारू ऐन ।।
सोरठियो दूहो भलो भल मरवण री वात।
जोवन छाई धण भली तारा छाई रात ।।

हिन्दी में इसे दोहा कहते हैं और राजस्थानी मे दूहा। सोरठे को राजस्थानी मे सोरठिया दूहा कहते हैं। सौराष्ट्र या सोरठ से इसका प्रचलन हुआ इसीलिए इसको यह नाम दे दिया गया। सोरठ नाम की एक प्रेमिका भी लोक-कथाओ मे बहुत मशहूर है। राजस्थानी साहित्य ससार मे दूहा एकच्छत्र सम्राट है। यहाँ के प्रेमाख्यान और वीर-गाथायें इसके बिना प्राणहीन हो जाती हैं। पुरातन हस्तलिखित पुस्तको मे और लोगो की जिव्हा पर ये लाखो की सख्या मे मिलते हैं। इस काव्यामृत के स्रष्टा दूहाकारो में से बडी कठिनाई से करीब करीब दो तीन

भोग भोगना, यही आदर्श था राजस्थानी संस्कृति का। राजस्थानी कलम के पुराने चित्रकारो ने देवताओ, वीरो, नायक-नायिकाओ और राग-रागिनियों को ही अपने चित्रो का विषय चुना था। देवपूजा में विनय के साथ-साथ वीरोचित ओज है। सुरा और सुन्दरी के वर्णन मे भी यहाँ सम्भोग वीरत्वपूर्ण मिलेगा। मूछो का इतना प्रभावोत्पादक वर्णन तो दूसरे किसी साहित्य मे शायद ही मिले। निम्न दूहे को उस अतीत कालीन जीवन का प्रतीक ही समझना चाहिए।

जनम अकारथ ही गयो, भड सिर खडग न भग्ग।
तीखा तुरी न माणिया, गोरी गळे न लग्ग॥

पुरातन से प्रेरणा लेकर भविष्य को ध्यान में रखते हुए हमें मगलमय वर्तमान का निर्माण करना चाहिये। हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य के आदर्शो और विचारो में भिन्नता होनी स्वाभाविक है पर इनका पारस्परिक गहन सम्बन्ध गम्भीर चिन्तन और अध्ययन की वस्तु है। सास्कृतिक इतिहास के बिना सास्कृतिक चेतना सम्भव नही है। वैसे तो भारतीय सस्कृति के इतिहास के क्षेत्र में ही अभी तक कोई सन्तोषजनक कार्य नही हुआ है और राजस्थानी सस्कृति की तरफ तो केवल थोडे से विद्वानो ने ही कदम बढाया है। कर्नल टॉड न होता तो हमारे पास अपने गौरव का आधुनिक युग के लिए कोई प्रेरणा स्रोत ही नही था। टॉड का इतिहास पढने से वंगीय विद्वानो को प्रेरणा मिली। उन्होने नाटक, उपन्यास, कहानियो और कविताओ के रूप मे हमारे बलिदान और त्याग से सारे राष्ट्र में चेतना लाने का बडा ही सफल

राजाओ को पृथ्वीपति और पृथ्वीनाथ कहकर सम्बोधित किया जाता था न कि पृथ्वीपुत्र कह कर। वे आर्य जाति को और आर्य खून को इस सम्बन्ध में ज्यादा महत्व देते थे। स्त्रिया अपने पति को आर्य पुत्र या आर्य कहकर सम्बोधित करती थी। उस समय पत्नी की तरफ से पति के लिए यही सर्वश्रेष्ठ सम्बोधन था। यह आदर्श सब जगह महकता हुआ मिलेगा कि आर्य खून या आर्य जाति ही इस पृथ्वी के भोगो को भोगने के लिए क्षमताशील अधिकारी है। इसी विचारधारा ने गोत्र एव खापो को जन्म दिया था। राजस्थानी काव्य में भी भूमि को इसी दृष्टि से देखा गया है। आधुनिक कवियो ने तो समय की गति के अनुसार इसे जननी कह कर सम्बोधित करना प्रारम्भ कर दिया है। वैसे यह कोई विस्मय की बात नही है क्योकि हमारे पूर्वजो की पत्नी (भूमि) सिवाय हमारी माँ के और बनती ही क्या! मानव समाज ने जब से परिवार नाम की सस्था को जन्म दिया तब से स्त्री को चार विशिष्ठ पद दिय हैं, मातृ पद, भगिनी पद, पत्नी पद और पुत्री पद। चारो ही बराबर महत्त्वपूर्ण हैं। एक सस्कृत कवि ने नारी का कितना वास्तविक चित्र चित्रित किया है,

कार्येषु मत्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, शयनेषु रम्भा।
धर्मानुकूला क्षमया धरित्री षाड्गुण्यमेतद्धि पतिव्रतानाम् ॥

सद्बुद्धि और सन्मार्ग के लिए इष्टदेव की वन्दना, न्याय, सत्य और जातीय गौरव के लिए खून लेना और देना, वीरगति प्राप्त कर स्वर्ग में आनन्द करना और विजयी होकर पत्नी, नायिका या प्रेमिका पृथ्वी के

भोग भोगना, यही आदर्श था राजस्थानी संस्कृति का। राजस्थानी कलम के पुराने चित्रकारो ने देवताओ, वीरो, नायक-नायिकाओ और राग-रागिनियो को ही अपने चित्रो का विषय चुना था। देवपूजा में विनय के साथ-साथ वीरोचित ओज है। सुरा और सुन्दरी के वर्णन में भी यहाँ सम्भोग वीरत्वपूर्ण मिलेगा। मूछों का इतना प्रभावोत्पादक वर्णन तो दूसरे किसी साहित्य मे शायद ही मिले। निम्न दूहे को उस अतीत कालीन जीवन का प्रतीक ही समझना चाहिए।

जनम अकारथ ही गयो, भड़ सिर खडग न भग्ग।
तीखा तुरी न माणिया, गोरी गळे न लग्ग॥

पुरातन से प्रेरणा लेकर भविष्य को ध्यान मे रखते हुए हमें मगलमय वर्तमान का निर्माण करना चाहिये। हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य के आदर्शों और विचारो मे भिन्नता होनी स्वाभाविक है पर इनका पारस्परिक गहन सम्बन्ध गम्भीर चिन्तन और अध्ययन की वस्तु है। सास्कृतिक इतिहास के विना सास्कृतिक चेतना सम्भव नही है। वैसे तो भारतीय सस्कृति के इतिहास के क्षेत्र में ही अभी तक कोई सन्तोषजनक कार्य नही हुआ है और राजस्थानी सस्कृति की तरफ तो केवल थोडे से विद्वानों ने ही कदम वढाया है। कर्नल टॉड न होता तो हमारे पास अपने गौरव का आधुनिक युग के लिए कोई प्रेरणा स्रोत ही नही था। टॉड का इतिहास पढने से वंगीय विद्वानो को प्रेरणा मिली। उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानियो और कविताओ के रूप में हमारे बलिदान और त्याग से सारे राष्ट्र में चेतना लाने का वडा ही सफल

अच्छा हो। हमारा प्रान्त तब से लेकर अब तक प्रेस और प्रकाशन के क्षेत्र मे बहुत पिछडा हुआ है। इस दिशा मे हमे अवश्य ही प्रयत्न करने चाहियें।

"राजस्थानी दोहा सग्रह" मे बहुत ही लोकप्रिय दोहो का मैने चुनाव किया है। राजस्थान के सभी भागो मे प्रचलित दोहो को एकत्रित करने का प्रयत्न किया गया है। जान-बूझ कर इस सग्रह को लघु रूप दिया है ताकि ज्यादा हाथो मे पहुँच कर ज्यादा से ज्यादा प्रचार पा सके। हमारी प्रान्तीय भाषा के उत्थान के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम सरल और सुबोध साहित्य को अधिक से अधिक प्रकाश मे लाये। राजस्थानी भाषा भाषी सभी महानुभावो को चाहिये कि अपने साहित्य की श्रीवृद्धि के लिये यथाशक्ति चेष्टा करें।

लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत

राजस्थानी दोहा संग्रह

वडकै डाढ वराह, कडकै पीठ कमठ्ठ री।
धडकै नाग धराह, बाघ चढै जद वीसहत्थ॥

जव वीस भुजाओ वाली देवी सिह पर सवार होती है तो वराह की डाढ़ वड़क जाती है, कच्छप की पीठ कडक जाती है और शेपनाग के फन पर रखी हुई पृथ्वी कांपने लगती है।

थरहर अवर थाय, धरहरती धूजै धरा।
पहरता तव पाय, वागा नेवर वीसहत्थ॥

हे वीस हाथो वाली देवी, जव तू अपने पैरो मे नेवर पहनती है तो उनकी गम्भीर ध्वनि से आकाश थर्राने लगता है और पृथ्वी कांपने लगती है।

पग झूलै दिगपाळ, हाल फाळ भूलै हसत ।
पीडै नाग पताळ, बाघ चढै जद वीसहत्थ ।।

जब वीस भुजाओ वाली देवी अपने वाहन सिह पर सवार होती है तो दिक्पाल विचलित होकर अपनी मस्ती भूल जाते हैं और पाताल में शेषनाग को भी पीडा होने लगती है ।

वाढाळी वहताह, राढाळी अम्मक रूडै ।
साढाळी सहताह, डाढाळी ऊपर करै ।।

जिस समय दोनो पक्षो में तलवारें झनझना रही हो, युद्ध के नक्कारो पर प्रहार पड रहा हो । उस समय हे बडी डाढी वाली भगवती, आप अपनी साडी की ओट कर मेरी रक्षा करना ।

धम धम वाग त्रमागळा, हुए नकीबा हल्ल ।
सादा आजै सम्मळी, किनियाणी करनल्ल ।।

जब युद्ध के नक्कारो पर चोट पड रही हो और नकीब आवाजें लगा लगा सेना को बढा रहे हो, उस समय हे माता करणी, प्रार्थना सुनते ही सहायतार्थ दौडी आना ।

उपरोक्त दोनों दोहे अलवर राज्य की ऐतिहासिक तलवार की मूठ पर स्वर्णाक्षरों मे लिखे हुए हैं ।

व्है सिंघ होफरडीह, पतसाहा परचा दिया
डरपी डोकरडीह, माँ आती मेवात मे

करणीजी ने भयानक सिहनी का रूप धारण कर वादशाहो को चमत्कार दिखाया था। आज बुढ़िया माता मेवात में सहायतार्थ आती क्यों डर गई है?

व्है सिंह होफरड़ीह, पतसाहा परचा दिया
डग भर डोकरडीह, माँ आई मेवात मे

भयानक सिहनी का रूप धारण कर बादशाहो को चमत्कार दिखाया था। आज भी वृद्धा जननी हमारी रक्षार्थ कदम बढ़ा कर मेवात में आई है।

पहिले वाला सोरठा अलवर में चारणों ने धरना देते समय व्यंगमय उपालम्भ देते हुए करणीजी को सम्बोधन कर कहा था। उनका कार्य सिद्ध हो जाने पर दो शब्दों को फेर नीचे वाले दोहे को कृतज्ञता सूचक रूप में बदल डाला।

बाहू चळी निरम्मळी, चख वीभळी सुरत्त
आजे करनल अेकळी, सवळी रूप सगत्त

निर्मल, चचल पख और गुदले रग की आख वाली चील का रूप धारण किय, हे देवी करणी! तू मेरी मुक्ति के लिए यहा उपस्थित हो।

पूगल के राव शेखाजी ने मुलतान की कैद मे अपनी बन्धन मक्ति की प्रार्थना की थी।

नाव रहदा ठाकरा, नाणा नाय रहद।
कीरत हदा कोटडा, पाड्या नाहि पडद॥

नाम सदा रहता है, रुपया नही। कीर्ति रूपी गढ ढहाने पर भी नही ढहता।

ऊदा अदतारा तणो, जासी नाम निघट्ट
जाण पखेरु उडियो, ना लिहडी ना वट्ट

कृपण लोगो का नाम नष्ट हो जाता है। उनका कोई चिन्ह भी पीछे नही रहता। जैसे पक्षी के उडकर चले जाने पर न तो कोई लकीर ही बनती है और न कोई पद चिन्ह ही।

कौटडियो वाघो कठै, आसो डाभी आज ।
गाईजै जस गीतडा, गया भीतडा भाज ।।

वाघा कोटडिया और आसा डाभी आज ससार मे नही है, उनके समकालीन भवन भी न जाने कभी के नष्ट भ्रष्ट हो गये । पर उनके यश गीत तो आज भी गाये जाते हैं ।

कोट खिसै देवन्न डिगै, वृख इधण व्हे जाय ।
जस रा आखर जेहिया, जाता जुगा न जाय ।।

दुर्ग नष्ट हो जाते हैं, देवालय भी काल के गास हो जाते हैं और वृक्ष सूखकर ईधन हो जाते हैं पर हे जेहिया, यशोगान के अक्षर युगो तक भी नही मिटते ।

घायल गत घूमैह, रै भूमी रजथान री ।
राळो रू रू मेह, साहित इमरत सूरमो ।।

राजस्थान की भूमि घायल की तरह कराह रही है । हे शूरो, इसमें साहित्य के अमृत की बूंदें बरसाओ ।

राजनीति रै रोग सू , वढै विपद जद पूर ।
मेटै सकट मुलक रो, कै साहित कै सूर ।।

राजनीति के रोग से देश जव विपदग्रस्त हो जाता है तो साहित्य या शूरवीर ही उसका सकट मिटा सकते हैं ।

सत ऊजळ सदेस, ऊजळ चारण ऊचरै ।
दीपै वारा देस, ज्यारा साहित जगमगै ।।

उज्ज्वल चारण (श्री उदयराजजी उज्ज्वल) यह सच्चा और उज्ज्वल सदेश देता है कि जिनका साहित्य जगमगाता है उन्ही का देश उन्नत होता है ।

शकर पूछै लक्षमी, एक अचभो मोय ।
कवि दाता अर सूरमा, तिण घर क्यू नह होय ।

शकर लक्ष्मी से पूछते हे, मुझे एक वात पर वडा अचम्भा आता है । वताओ, तुम कवि, दाता और शूरवीर के घर क्यो नही रहती ?

कवि घर म्हारी बैनडी दाता देय लुटाय
सूरा घर राडी रहूँ, रहूं सूम घर छाय

लक्ष्मी ने उत्तर दिया, कवि के घर तो मेरी बहिन सरस्वती रहती है इसलिए उसके घर में नही रहती। दाता के यहा जाती हूँ तो मुझे वह लुटा देता है। शूरवीर के घर जाने पर मुझे विधवा होकर रहना पडे, इसलिए मैं तो कजूस के घर ही छाई रहती हूं।

दाता जो सत दत्त दियो, कविजन लीनो खाय।
कविजन कीरत दत्त दियी, जाता जुगा न जाय॥

दाता ने तो प्रसन्न होकर कवि को दान दिया। वह धन तो कवि के यहा खर्च हो गया। पर बदले मे दाता को कवि ने जो कीर्ति का दान दिया वह कीर्ति तो युगो तक कायम रहती है।

अत्थ जिका दी आपणी, हरक्क गरीबा हत्थ।
गवरीजे जस गीतडा, तात तणक्का सत्थ॥

जिन लोगो ने अपनी सम्पत्ति प्रसन्नतापूर्वक गरीबो को दे दी, उनके यशोगान सदा वाद्ययन्त्रो पर गौरव के साथ गाये जाते रहेंगे।

मात पिताहिज वीसरै, बाधव बीसारैह ।
सूरा पूरा वातडी, चारण चीतारैह ॥

माता पिता बन्धु बाधव तो अपने सबधियो को फिर भी भूल जाते हैं। पर शूरवीरो की वाता को चारण याद करते रहते हैं। उनकी कीर्ति गाथाओ गाते रहते हैं।

कविराजा खेनी करो, हळ सू राखो हेत ।
गीत जमी मे गाड दो, ऊपर राळो रेत ॥

हे कविराज, खेती करो और हल से प्रेम करो। गीतो को जमीन में गाडकर ऊपर से रेत डाल दो। आप लोगो की कद्र करने वाले नही हैं।

ध्रम जाता, घर पळटता, त्रिया पडता ताव ।
अै तीनूं दिन मरण रा, कुण रक कुण राव ॥

जब धर्म जा रहा हो, भूमि दबाई जा रही हो और स्त्रियो पर आपत्ति पडती हो, ये तीनो दिन, राजा और रक सभी के लिए लडकर मर मिटने के हैं।

अस लीलो पिव पीथळो, चपावती ज नार।
अै तीनू ही एकठा, सिरज्या सिरजणहार॥

नीला अश्व, पीथळ जैसा प्रेमी और चपावती जैसी नारी, इन तीनो का विधाता ने एक साथ ही सृजन किया था।

कोई घोडो कोइ पुरखड़ो, कोई सतसगी नार।
सरजण हारे सिरजिया, तीनू रतन ससार॥

किसी घोडे का, किसी पुरुष का और किसी सती नारी का सृजन कर विधाता ने संसार को तीन रत्न दिये हैं। अर्थात् ससार में सृष्टि-कर्त्ता ने तीन रत्न पैदा किये हैं, उत्तम अश्व, वीर पुरुष और सती नारी।

पीथळ धोळा आविया, बहुली लग्गी खोड़।
कामण मत्त गयन्द ज्यू, ऊभी मुक्ख मरोड॥

हे पृथ्वीराज, बाल सफेद हो गये हैं, वृद्धावस्था ने और भी कई दोष पैदा कर दिये हैं और इधर कामिनी मस्त हाथी की भाति मुख मोड कर खडी है।

हळ तो घूना धोरिया, पन्थज गग्घा पाव ।
नरा तुरा अर वनफळा, पक्का पक्का साव ।।

मजबूत बैल ही हल में जोतने लायक होते हैं और खूब चले हुए ऊंट ही पथ में चलने योग्य होते हैं । पुरुष, अश्व और वनफल का परिक्व होने पर ही आनन्द आता है ।

राठौड़ पृथ्वीराज के ऊपर लिखे दोहे के उत्तर में उनकी नव-विवाहित रानी चंपावे ने यह दोहा कहा था ।

कथा ऊभा कामणी, साईं, तू मत मार
रावण सीता ले गयो, वे दिन आज सभार

प्रभु, पति के जीवित रहते तू किसी की पत्नी को मत मारना । वह दिन तो याद करो जब रावण सीता को हरण कर ले गया था तब तुम्हे कितनी पीडा हुई थी ।

तू छै देसी रूखड़ो, अै परदेसी लोग ।
म्हानै अकबर तेडिया, तूं कत आयो फोग ।।

हमें तो अकबर ने यहा भेजा है, पर हे मातृ भूमि के पौधे फोग, तू यहा इन परदेशी लोगो में कहा चला आया ?

सरवर हंस मनायलै, नैड़ा थका न छोड
जा सू लागो फूटरा, वा सू खैंच न तोड

सागर, इन रूठे हसो को मना लो, अपनों को छोडना उचित नही। ।नसे तुम्हारी शोभा बढती है उनसे प्रीत नहीं तोडनी चाहिये।

जावो तो बरजा नही, रैवो तो या ठौड
हसा ने सरवर घणा, तो सरवर हस करोड

सागर कहता है, यदि ये रहना चाहते हैं तो रहें, यह जगह पडी है। जाना चाहते हैं तो जायें, मैं रोकता नही।

इन हसो के रहने के लिए कई सरोवर उनका स्वागत करते हैं, तो इस सागर में भी आने के लिए अनेको हस उत्सुक हैं।

हीलोरा दरियाव रा, जा जा, हस सहन्त।
बुगला कायर बापडा, पैलै तीर पुलन्त॥

तालाब के हिलोरो को बढ़ बढ़ कर हस ही सहते हैं। बेचारे कायर बगुले तो पहिले ही किनारे की ओर दौड आते हैं।

सुण समदर सौ योजना, लीक छोड मत जाह ।
छोटा छीलर ऊभळै, तै घर रीत न आह ।।

सौ योजन तक फैले हुए हे समुद्र, अपनी मर्यादा का उलघन न कर, छोटे-छोटे तालाव की सीमा तोडकर बहा करते हैं पर तुम्हारे कुल मे ऐसी ओछी रीत नही ।

सायर फाट्यो, जळ हुट्यो, माणक रळवळियाह ।
रीत विखोटा माणसा, साखोटा चुणियाह ।।

जल सूख गया, समुद्र की भूमि कट गई और माणिक बाहर निकल आये । ना समझ मनुष्यो ने इस रत्न भडार मे से केवल शखो के टुकडे ही चुने ।

दाडिम केरै फूलडै, भवरा प्रीत म वध ।
जे सौ वरसा सेवियै, तऊ न पावै गध ।।

हे भ्रमर, दाडिम के फूल से प्रेम न कर । यदि तू सौ वर्षों तक भी इनकी सेवा करेगा तो भी यहा गन्ध नही मिलेगी ।

भवरो जाणै सब्ब रस, जिण चाखी वणराय ।
घुण जाणै किम वप्पडो, सूका लक्कड खाय ।।

भवरा ही सब प्रकार के रस का पारखी है जिसने समस्त वनराजि का आस्वादन किया है । बेचारा घुन तो सूखे लक्कड खाता है, उसे इसका क्या पता ।

तोड प्रीत फिर सधियै, तामें रहै न लाज ।
जळ ताता ठडा किया, स्वाद किसो उदैराज ।।

उदयराज कहते हैं कि जैसे जल को गरम करके फिर ठडा करने से स्वाद नही रहता, उसी प्रकार टूटी हुई प्रीति को यदि फिर जोडा जाये तो उसमें वह आनद नहीं रह जाता ।

दूध फाट घृत कह गयो, मन फट कह गई प्रीत ।
फाट्या पाछै ना मिलै, या की या हिज रीत ।।

दूध फट जाने पर घृत नही रहता और मन फट जाने पर प्रीत नहीं रहती । फटने के बाद ये फिर कभी नही मिलते, इनकी यही रीत है ।

अगन सोर गज केहरी, पाव पदम सिर मोड़ ।
उदैराज कैसे वणै, प्रीत कपट एक ठोड ।।

अग्नि और शोरा, हाथी और सिंह, जूती और सेहरा, प्रेम और कपट उदयराज कहते हैं ये विपरीत चीजें एक स्थान पर कैसे रह सकती हैं ।

तिरिया रस अर तात रस, ताते मद की धार ।
चित चिन्ता की ज्वाळ नै, तीन बुझावणहार ।।

युवती स्त्री, तन्त्री नाद और तीक्ष्ण मद की धार ये तीनो ही चिन्ता की ज्वाला को बुझा देने वाले हैं ।

दारू मीठो दाख रो, सूळा मीठी सिकार ।
सेजा मीठी कामणी रण मीठी तरवार ।।

शराब दाख की अच्छी होती है, शिकार के सूले स्वादिष्ट होते हैं, शय्या में कामिनी और युद्ध मे तलवार प्रिय होती है ।

सोरठियो दूहो भलो, भल मरवण री वात।
जोवन छाई धण भली, तारा छाई रात॥

सोरठिया दूहा, मरवण की वात, युवती स्त्री और तारक खचित रात्रि, ये सब हृदय को मुग्ध करने वाली होती हैं।

डूगर केरा वाहळा, ओछा केरा नेह।
वहता बहै उतावळा, छिटक दिखावै छेह॥

पहाड से गिरने वाले झरने और ओछे मनुष्यो का स्नेह ये दोनो ही वहते समय तो बहुत वेग से बहते हैं पर शीघ्र ही इनका वेग समाप्त हो जाता है।

तरुणी जणै कपूत मत, चंगो जोवन खोय।
जणै तो वैर विहडणो, के कुळ मडण होय॥

हे तरुणी, कुपुत्र को जन्म देकर अपने सुन्दर यौवन को न गवाना। यदि जन्म देना है तो ऐसे वीर पुत्र को दे जो तुम्हारे वैर का बदला ले या कुल की शोभा बढ़ाये।

केहर केस भमग मरिण, सरणाई सुहडांह ।
सती पयोधर सूम धन, पडसी हाथ मुवाह ॥

सिह के केश, भुजग की मणि, वीर योद्धाओ के शरण में गये हुए शत्रु, सती के कुच और सूम का धन, ये सब मरने पर ही हाथ आ सकते हैं ।

जन्म अकारथ ही गयो, भड सिर खग्ग न भग्ग ।
तीखा तुरी न माणिया, गोरी गळे न लग्ग ॥

यदि योद्धाओ के सिर पर तलवार का प्रहार नही किया, तेज घोडो की सवारी नही की और गौराङ्गी स्त्री को गले नही लगाया तो यह जन्म व्यर्थ ही गया ।

निघडक सूतो केमरी, तो भी विमुहा पाव ।
गज गैडा धीर न धरै, वज्र पडै वघवाव ॥

सिह यद्यपि निश्चिन्त सोया हुआ है तो भी हाथी और गैंडे अधीर हो रहे हैं और उनके पाव पीछे ही पड रहे हैं । उनको व्याघ्र गघ वज्र प्रहार की तरह कठोर मालूम हो रही है ।

काछ द्रढा कर वरसणा, मन चगा मुख मिट्ठ ।
रण सूरा जग वल्लभा, सो हम विरळा दिट्ठ ॥

दृढ़ चरित्र, मुक्त हस्त से दान देने वाले, पवित्र हृदय, मिष्ट भाषी, युद्ध वीर और जनप्रिय, ऐसे पुरुष हमने विरले ही देखे हैं ।

महला लूटे धाडवी, झूपडिया मत आव ।
झूपडिया री लूट मे, जीव सीलणं जाव ॥

हे डाकू, यदि लूटना चाहते हो तो महलो की ओर जाओ । यहा झोपडियो मे क्या रखा है ! वीर योद्धाओ की झोपडियो को लूटने मे तो व्यर्थ ही प्राण गवा दोगे ।

टीटै सरका भीतडा, घाते ऊपर घाम ।
वारीजै भड झूपडाँ, अघपतिया आवास ॥

टूटे हुए तिनको से बनी हुई जिनकी दीवारें हैं और छत पर घास डाला हुआ है, योद्धाओ के ऐसे झोपडो पर राजाओ के महल भी न्यौछावर कर देने चाहिए ।

६ ऊघ न आवै त्रण जणा, कामण कही किणाह
उकडू थटाँ, बहु रिणा, वैर खटक्के ज्याह

निद्रा तीन प्रकार के दुख वालो को नही आती । उकडू बैठे हुए को, कर्ज से दबे हुए को और जिसके दिल में बैर खटक रहा हो ।

कीधा कौल न चूकणा, मर मूकणा, नह मान
सत पुरखा री लज्जडी, नित रखै रहमान

जो वचन देकर कभी विमुख नही होते, प्राण त्याग देते हैं पर मान को नही छोडते । ऐसे पुरुषो की लज्जा स्वय परमात्मा रखते है ।

वैद रहीजे राज घर, पावै केथ गरीब ।
हेली दूध घपाड ओ, म्हारै नीब तबीब ।।

वैद्य तो राजघरानो में ही रहते हैं, हम निर्धन उन्हें कैसे रख सकते है । हे सखी, हमारे तो दूध से सींचा हुआ यह नीम ही वैद्य है ।

खाटी कुळ री खोवरा, नैपै घर घर नीद
रसा कंवारी रावता, वीर तिको ही वीद

पूर्वजों की कष्ट से कमाई, कुल ख्याति को खोने वाले पुरुष आज घरो में सोये पडे हैं।

वीरो, याद रखो, पृथ्वी तो सदा से क्वारी है। जो वीर होगा वही उसका पति होगा।

एक्कर वन वसतडा, एकर अनर काय
सिंघ कवडी ना लहै, गैंवर लक्ख विकाय

हाथी और सिंह एक ही वन के रहने वाले हैं। इनमें ऐसा अन्तर क्या है जो सिंह को तो कोई कौडा मे ही नही खरीदता और हाथी लाखों में बिकता है।

गैंवर गळत्थियो, जंह खैंचे तह जाय
सिंघ गळत्थरा जे सहे, तो दह लाख विकाय

हाथी गले में रस्सा, बंधन डालना स्वीकार कर लेता है, उसे जिधर खैंचते है उधर ही जाता है।

अगर सिंह भी गले मे रस्सा डालना मजूर कर ले तो वह दस लाख में बिके।

समर चढै काठा चढै, रहै पीव रै साथ।
एक गुणा नर सूरमा, तिगुण गुणा तिय जात ॥

वीर पुरुषो में तो वीरत्व का ही एक गुण होता है पर स्त्री जाति मे तीन-तीन गुण होते हैं। वे युद्ध क्षेत्र में लडती हैं, अग्नि मे जलकर सती हो जाती हैं और मरण पर्यन्त पति का साथ देती है।

चन्द उजाळै एक पख, बीजै पख अंधियार।
वळ दुहु पाख उजाळिया, चन्दमुखी बळिहार ॥

चन्द्रमा महीने के एक पक्ष में ही उजाला करता है और दूसरे में अन्धेरा हो जाता है, पर यह चन्द्रमुखी स्त्री धन्य है जिसने सती होकर दोनो पक्षो (पितृ कुल और पति कुल) को उज्ज्वल कर दिया।

सो गुण वारूं देखजे, वेटी रा गुण दोय।
परणाता पाछी रहै, वळवा आगै होय ॥

वेटी के दो गुण देखकर सैंकडो गुण न्योछावर कर देने चाहिए। विवाह के समय वह पति के पीछे रहती है और मृत्यु के समय आगे होकर सती हो जाती है।

ठुकराणी दे हू चणू, रण चढतै रजपूत।
चूडो मतो लजावजो, मन रखजो मजबूत।।

ठकुरानिया, रण यात्रा को प्रस्थान करते हुए पतियो को उपालम्भ-पूर्वक कहती है, अपने मन को मजबूत रखना। मेरी चूडियो को लजाना मत। कोई कायरतापूर्ण कार्य न करना जिससे मुझे लज्जित होना पडे।

मतवाळा दळ आविया, छोडोजे गळ वाह
आम त्रिभागा ढाकिया, छोणी पाखर छाह

पत्नी पति से कहती है, शत्रु दल आ गया। सारा आकाश भालो से ढक गया और पृथ्वी, पाखरो की छाया से ढक गई।

मतवाले, अब गल वाहछोड, युद्ध के लिए कमर कसो।

कन्था रण मे पैस कै, काई जोवै छै साथ।
साथो थारै तीन है, हियो, कटारी, हाथ।।

हे प्रिय रणागण मे प्रवेश करके अब साथ क्या देख रहे हो। हृदय कटारी और हाथ ये तीनो ही तुम्हारे साथी है।

काय उताळी कंकरणी जे मद पीवरण जेज ।
कथ समप्पै हेकलो, कटका ढाह कळेज ॥

हे चील, यदि मेरे पति को मद पीने मे देरी हो रही है तो तू अधीर क्यो होती है । वह अकेला ही सारी सेना को धराशाही करके उनके हृदय से तुम्हारी तृप्ति कर देगा ।

देख सहेली मो धरणी, अजको वाग उठाय ।
मद प्याला जिम एकलो, फौजा पीवत जाय ॥

हे सहेली, आज देखो, मेरे पति के सामने कौन लडने के लिए आता है । वह शराब के प्यालो की भाति सारी सेनाओ को अकेला ही पीता (मारता) जा रहा है ।

काळी फील कडाह लै, की खप्पर तो हत्थ ।
हेकरण साथ धपाडसी, मोताहळ गजमत्थ ॥

हे काली, तुम्हारे हाथ के छोटे मे खप्पर मे क्या होगा, कोई बडा कडाह ले लो । मेरा पति गज मस्तको को काट-काट कर एक साथ ही गजमौक्तिको से तुम्हे तृप्त कर देगा ।

सखो तुम्हीणा कन्थ नै, घेरयो घणा जणाह ।
सिर वहुरा, मुख मगणा, वैरी चहूं त्र्ळाह ॥

हे मखी, तुम्हारे पति को वहुत से लोगो ने घेर लिया है । सिर तो वोहरो ने घेर रखा है मुंह के आगे भिखारी खडे हैं और वैरी चारो ओर छाये हुए हैं ।

वित बहुरा दत मगणा, वैरी खाग भळाह ।
सारा नै चूकावसी, जे ऊभो कुसळाह ॥

हे सखी, यदि वह कुशलतापूर्वक खडा रहा तो सब को चुका देगा । वोहरो को धन देगा, भिखारियों को दान देगा और वैरियो को तलवार के प्रहारो से परास्त कर देगा ।

घर घोडो पिव अचपळो, वैरी वाढै वास ।
नितरा वाजै ढोलडा, कद चुडलै री आस ॥

घर मे घोडा है, प्रियतम का स्वभाव तेज है और शत्रु का पडोस है, फिर वीरो को उत्साहित करने वाले ढोल प्रतिदिन वजते रहते हैं । ऐसे सयोग देखकर मुझे अपने सुहाग की आशा नही है । अर्थात् मेरे प्रिय वहुत वीर हैं अत ऐसी परिस्थिति मे चाहे जब लडकर प्राण गवा सकते हैं ।

✓ करडा कुच नू भाखतो, पडवा हदी चोळ ।
अब फूला जिम आगमै, भाला री घमरोळ ।।

शयनगृह की रति क्रीडाओ मे वह मेरे कुचो को भी कठोर बताया करता था, पर आज वही अपने अ गो मे वज्र के समान कठोर और तीक्ष्ण भालो के प्रहार फूलो की तरह झेल रहा है ।

देवै गींधरा दुरवडी, समळी चपै सीस ।
पख झपेटा पिउ सुवै, हू वळिहार थईस ।।

गृद्धिनी पैर दबा रही है और चील सिर चाप रही है । उनके पखो की हवा से प्रियतम सो रहे ह । उनके इस वीर रूप पर मैं न्योछावर होती हूँ ।

समळी और निसक भख, जम्बुक राह म जाह ।
पण घण रो किम पेखही, नयण विणट्ठा नाह ।।

हे चील, मेरे पति का और सब कुछ चाहे नि शङ्क होकर खा ले पर गीदड की रीति अपना कर उसके नेत्रो को न खाना । यदि उसके नेत्र नष्ट हो जायेंगे तो वह मेरा भर्ता होना किस प्रकार देख सकेगा ।

भड विण माथै जीतियो, लीलो घर ल्यायाहे।
सिर भूल्यो भोळो घणो, सासू रो जायाहे॥

बिना सिर के ही मेरे पति ने युद्ध में विजय प्राप्त कर ली और उसका नीला अश्व उसे घर ले आया। हे सखी, मेरी सास का पुत्र, बहुत भोला है, वह युद्ध भूमि मे अपना सिर ही भूल आया।

घड धरती पग पागडै, आता तणो घरट्ट।
तोहि न छाडै साहिबो, मूछा तणो मरट्ट॥

उसका धड धरती पर लटक रहा है, पैर पागडे में अडे हुए हैं और अस्थिपजर मात्र रह गया है, फिर भी मेरा पति मूछों की मरोड नही छोड रहा है।

खाग खणकै सिर फटै, तिल तिल माथै सीव।
आला घावा ऊठसी, धीमो बोल नकीवं॥

खड्ग के प्रहारो से सिर फट गया और रोम-रोम पर टाके लगे हुए है। हे नकीव, जरा धीरे बोलो नही तो मेरा घायल पति युद्ध का आह्वान जानकर गीले घावो से ही उठ खडा होगा।

कठण पयोधर लग्गता, कसमसतो तू कन्त ।
सेल घमोडा किम सह्या, किम सहिया गजदन्त ॥

हे पति, रति क्रीडा के समय मेरे कठोर पयोधरो का स्पर्श होने पर तू कसमसाने लगता था । मुझे आश्चर्य होता है कि युद्ध भूमि में तुमने भालो के तेज प्रहार और हाथियो के पैने दात अपने उन्ही अङ्गो से कैसे सहे ।

मै परणन्ती परखियो, मूछा भिडियो मोड ।
जासी सुरग न एकलो, जासी दळ सजोड ॥

मैंने विवाह के समय ही परख लिया कि प्रियतम, जिसकी मूछें सेहरे से लग रही हैं, अकेला ही स्वर्ग नही जायेगा वल्कि वहुत बडा दल सजाकर जायेगा अर्थात् अनेक योद्धाओ को मार कर मरेगा ।

ढोल सुणता मगळी, मूंछा भौह चढत ।
चवरी ही पहचाणियो, कवरी मरणो कन्त ॥

विवाह के मागलिक ढोल की आवाज सुनते ही उसकी मूछें भौंहो से मिलने लगी । उस कुमारी ने भावर के समय ही पहिचान लिया कि उसका पति अधिक जीवित न रहेगा ।

हथलेवै री मूठ किण, हाथ विलग्गा माय ।
लाखा वाता हेकलो, चूडो मो न लर्जायं ।।

हे मा, हथलेवे के समय हाथो का स्पर्श करते ही मैंने जान लिया कि मेरा पति प्राण रहते मेरे चूडो को लज्जित नहीं होने देगा ।

नह पडोस कायर नरा, हैली वास सुहाय ।
वळिहारी उण देसडै, माथा मोल विकाय ।।

हे सखी, कायर पुरुषो का पडोस मुझे तनिक भी नही सुहाता । मैं उस देश पर न्योछावर हूं जहां मस्तक मोल विकते हैं ।

सेजा मे घर घर सखी, आरणै धजर अजारण ।
धारा मे राखै धजर, सो कुरण कन्य समारण ।।

हे सखी, शय्या मे धैर्य रखने वाले अज्ञानी तो घर-घर मे हैं पर तलवारो की धारो के सामने धैर्य रखने वाला मेरे पति के सामने और कौन है ।

खग वाऊ उळणै घणी, मैगळ रहिया घूम ।
नणदळ ऊची बाध दो, बाजूबध री लूम ।।

मतवाले हाथी चारो ओर घूम रहे हैं और मैं जब उन पर प्रहार करती हूँ तो मेरे बाजू बध की लूम उलझ कर बाधा उपस्थित कर देती है। हे ननद, इसे जरा ऊची बाध दो ।

पीहर पुछै खोलणी, दई भूखण केर ।
हैरविया भाभी हसी, नणद कनै नाळेर ।।

पीहर मे ननद के आभूषणो की मञ्जूपा खोलकर देखने पर उसमे सती होने का नारियल देखकर भाभी हसने लगी ।

हूं पाछै आगै हुवै, आणी नाह घरेह ।
जो वाल्ही घण जीव सूं, आगे मुज्झ करेह ।।

हे नाथ, विवाह के समय तुम आगे होकर मुझे पीछे-पीछे लाये । यदि तुम मुझे जी से भी अधिक प्यारी समझते हो तो अब मुझे आगे करना अर्थात् युद्ध मे वीर गति को प्राप्त कर मुझे सती होने का अवसर देना।

जीमरा मेळँ जीमता, इक थाळी इक पात।
घाव अकेला खावता, कीधी कन्थ दुभात।।

हे प्रिय, एक थाली मे साथ वैठकर हम भोजन किया करते थे आज १८ भूमि में घावो को अकेले ही खाते समय तुमने यह दुभात क्यो की ?

भव आया आगरा वहै, घावा रगत अतोल।
सङ्ग वळिया ही चूकसी, पग मडणा रो मोल।।

पति युद्ध भूमि से घायल होकर लौटे हैं। उनके अगो से निरन्तर रक्त की धारा वह रही है। युद्ध मे डटकर शत्रु को परास्त करने का मोल अब इनके साथ सती होने से ही चुकेगा।

ढोल वजता हे सखी, पति आया मुझ लेरा।
वागा ढोला हू चली पति रो वदळो देरा।।

हे सखी, विवाह के समय ढोल वजा कर पति मुझे लेने आये थे। अब ढोल वजा कर ही मैं उनका वदला चुकाने जा रही हूँ (सती होने के लिए)।

बेटा हू जाऊ बळण, तूं छोटो इण बेर।
सुरपुर बेगो आवजे, बहु नै लारा लेर॥

हे पुत्र, मैं तेरे मृत पिता के साथ सती होने जा रही हू। तू अभी छोटा है पर बडा होने पर अपनी बहू को साथ लेकर शीघ्र ही स्वर्ग आ जाना।

पथी एक सदेसडो, बावल नै कहियाह।
जाया थाळ न वज्जिया, टामक टहटहियाह॥

हे पथिक, एक सदेश मेरे पिता को कह देना, 'मेरे जन्म के समय अशुभ समझकर आपने थाली भी नही बजाई थी पर आज मेरे सती होने के समय ससार ढोल बजा बजा कर मेरा सम्मान कर रहा है।

सुत मरियो बगतर पहर, ब्यायण दूध सवाय।
झीणी मलमल ओढिया, बहू बळेवा जाय॥

मेरा पुत्र तो जिरह वस्तर पहनकर युद्धस्थल में मरा पर पुत्रवधू तो झीनी मलमल की ओढनी ओढ़ कर सती होने जा रही है। समधिन का दूध वास्तव में अधिक प्रशसा के योग्य है।

इळा न देणी आपणी, रण खेता भिड जाय ।
पूत सिखावै पालणै, मरण वडाई माय ॥

पालने में झुलाते समय माता अपने पुत्र को मृत्यु की ममता का पाठ पढ़ा रही है कि अपनी भूमि पराये हाथ मे न जाने दो चाहे युद्ध भूमि में लड कर प्राण दे दो ।

दिन दिन भोळो दीसतो, सदा गरीबी सूत ।
काकी कुंजर काटता, जाणवियो जेठूत ॥

वह वेचारा सदा भोला भाला सा दिखाई देता था पर काकी ने युद्ध क्षेत्र में तलवार से हाथियो को काटते समय अपने भतीजे की वीरता को परखा ।

मात सिखावै गोद मे, बाळक सुत नें वात ।
रण मरिया मा अजसै, रण भाज्या लज जात ॥

माता अपने बच्चे को गोदी मे ही यह शिक्षा देती है कि रणांङ्गन में जो वीरतापूर्वक लडकर मरता है उसकी मा को गौरव का अनुभव होता है और जिसका पुत्र युद्ध से भग जाता है वह माता लज्जित हो जाती है ।

सुत मरियो हित देस रै, हरख्यो वन्धु समाज ।
मा नह हरखी जनम दे, जतरी हरखी आज ।।

देश के लिए पुत्र ने प्राण दे दिये हैं, यह देखकर वाधवगण हर्पित हो उठे हैं। उस वीर की माता को जितनी प्रसन्नता आज उसके वीर गति प्राप्त करने पर हुई है उतनी जन्म के समय भी नही हुई थी।

हू वळिहारी राणिया, भ्रूण सिखावण भाव ।
नाळो वाढण री छुरी, झपटै जणियो साव ।।

कवि कहता है, रानियो द्वारा गर्भ मे ही वालको को युद्ध की शिक्षा देने की विद्या पर मैं वलिहारी हूँ। सद्यजात शिशु भी नाला काटने की छुरी की ओर झपटता है।

थाळ बजता हे सखी, दीठो नैण फुलाय ।
वाजा रै सिर चेतणो भ्रूणा कवण सिखाय ।।

हे सखी, प्रसूति के समय थाल वजते ही इस सद्यजात शिशु ने आखें खोलकर बडी उत्सुकता से देखा। वाजे की ध्वनि के साथ ही उत्तेजित होना इसको गर्भावस्था मे ही किसने सिखा दिया है ?

चून चुग्यो चढ चू तरै, कर कर खैखाराह ।
बदळो आज चुकावस्या, घस अरिअस धाराह ।।

स्वामी का अन्न हमने इतने दिनो तक खाया है । उनकी सेवा करने । हमें अवसर अब मिला । आज शत्रुसैन्य की खडग धारा मे घुस कर अन्न खाने का बदला चुका देंगे ।

टह टहु घुरै अमागळा, हुवै सीधव ललकार ।
चित कू कभ चैळा चहै, आज मरण त्यू हार ।।

नगाडो की ध्वनि हो रही है, सिन्धू राग वीरो को ललकार रहा है और वीरो का चित हाथियो के साथ खेलने के लिए उत्सुक हो रहा है । आज मृत्यु का त्योहार है ।

७ कितांक राखै काळजो, कितांक नर झूझार ।
आमन्त्रण आयो अठै, आज मरण त्यूंहार ।।

आज मरण त्योहार का निमन्त्रण आया है । देखना है कितने मर्द कलेजा रखते हैं और कितने जूझार हैं ।

मतवाळा घूमै नही, नह घायल घरणाय।
वाळ सखी सो द्रंगडो, जिरा भड वपड कहाय ।।

जहा युद्ध के मतवाले वीर न ललकारते हो और घायल योद्धा बड-बड़ाते न हो, हे सखी, आग लगे ऐसे गाव को जहा वीरो को बेचारा कह कर सबोधित किया जाता है।

घर घोडा ढाला पटळ, भाला थभ बणाय।
वे सूरा भोगे जमी, अवर न भोगे काय ।।

जिनके घर पर घोडे हो, ढालो की छाया हो और भालो के स्तम्भ बने हुए हो, ऐसे वीर पुरुष ही पृथ्वी के स्वामी होकर उसका भोग करते हैं, दूसरे नही।

पर दळ पाडै घूमता, नाह जुहारै आय।
राणी इसडा रावता, हाथा नीम बटाय ।।

जो मतवाले होकर शत्रु की सेना का सहार करते हैं और विजयी होकर तुम्हारे पति को जुहार करते हैं, ऐसे योद्धाओ के घावो के लिए हे रानी, अपने हाथो से नीम घिसकर औषधि बनाओ।

आग झड़ै चसमा मही, अड़ै भुजा असमान ।
सिर घर देणां देस कज्ज, सो उठ गया जवान ।।

जिनकी आंखो से आग वरसती थी जिनकी भुजायें आकाश तक पहुँचती थी और जो देश के लिए घर वार तथा प्राण तक दे देते थे, ऐसे वीर पुरुष इस पृथ्वी से ही उठ गये ।

ॐ कटकां तबल खुडक्किया, होय मरद्दां हल्ल ।
लाज कहे मर जीवडा, वैस कहे घर चल्ल ।।

युद्ध के नगाड़े वज रहे हैं और वीर योद्धाओ की ललकारो की ध्वनि आ रही है । वीरत्व लड मरने के लिए पुकार रहा है और यौवन घर लौटने का आग्रह करता है ।

हाथा मे हथियार, गाहडमल वाधै घण ।
भारत पडिया भार, कोईक झेलै किसनिया ।।

हाथो में हथियार लिए वैसे तो अनेक पुरुष, 'गाहडमल' बने फिरते हैं, पर हे किसनिया, युद्ध भूमि में तलवार के बोझ को झेलने वाले विरले ही हैं ।

मडती हाटा मीत री, मुरधर रे मैदान ।
मू ड कटे लडता मरद, अनम वीर कुळ जाण ।।

मरुधर के मैदान म मृत्यु की दुकानें लगती थी । सिर कट जाने पर भी योद्धा लडते रहते थे । यहा वीर कुलो ने झुकना सीखा ही न था ।

सोढे अमरकोट रे, यू वाही अवयट्ट
जाणं वेहूं भाइया, आथ करी वे वट्ट

ऊमरकोट के सोढे ने तलवार मारी जिससे आक्रान्ता के शरीर के दो टुकडे ऐसे समतुल्य हो गये मानो दो भाइयो ने पैतृक सम्पत्ति का बटवारा किया है ।

सुख महला नह सोवणो, भार न झल्ले सेस
तो ऊभा दलपत तणा, मुरधर जाय महेस

अन्याय का बोझ इतना वढ गया है कि शेषनाग सहन नही कर पा रहा है ।

ऐसे समय सुख महलो में नही सोया जाता । पराक्रमी दलपतसिंह के वीर पुत्र महेश, तुम्हारे रहते हमारी मरुधरा जा रही है ।

जानीवासो मेडते, माढो दिखणी देस।
दळ दिखणी रे ऊपरा, वणियो वीद महेस ॥

वारात के ठहरने की जगह मेडता है और दक्षिण देश वाले मरहठे वधू पक्ष के हैं। दक्षिणी दल के ऊपर वर बनकर वीरवर महेश गया।

दिखणी आयो सज दळा, पृथी भरावण पेस
कृपा तो विन कुण करै, म्हारी मदत महेस

दक्षिण से मरहठे अपनी फौजें सजाकर आये हैं। वीरवर महेश, तुम्हारे सिवाय हमारी मदद कौन कर सकता है ?

विदा हुया अजपाळ सू, कीनी अरज महेस।
जीवू जव लग जाणजो, कदै न भिळसी देस ॥

जोधपुर के गढ़ से रवाना होते हुए वीर महेश ने अर्ज की, मेरे जीवित रहते हुए हमारी मरुधरा कभी नही जा सकती।

महेस कहे सुण मेडता, साचो साख भरेस।
कुण भिडसी कुण भागसी, देखे जसी कहेस ॥

राजा महेश कहता है, हे मेडता, सुनो, तुम सच्ची साक्षी देना। तुम्हारे इस सग्राम क्षेत्र मे कौन लडता है और कौन भागता है ? जैसा देखो वैसा ही कहना।

कू पै वाही कोप कर, तोपा मे तरवार
डिबाई नै मारता, गई सितारे व्हार

कूपावत महेशदास ने क्रुद्ध हो, तोपो पर तलवार से हमला किया। जनरल डिबोय पर वार किया तो सतारे तक वात पहुँची।

दूजा ज्यू भागो नही, दाग न लागो देस
बागा खागा बाकडो, महि बाको महेस

देश के दाग लगाकर दूसरो की तरह वह भगा नही। तलवार चलाने में अत्यन्त दक्ष रणबका महेश पृथ्वी पर एक अनोखा वीर था।

पग जडिया पताळ सूं, अडिया भुज अमरेस
तन झडिया तरवारिया, मुडिया नाहि महेस

वह ऐसा जम कर लडा कि जैसे उसके पाव पाताल में जड गये हो। उसकी विशाल भुजायें आकाश को छूती थी।

तलवारो से उसकी वोटी वोटी कट गई पर वीरवर महेश मुडा नही।

फ्रंच जनरल डिवोय के सेनापतित्व में महादजी सिंधिया की सेना ने अजमेर और मेडता पर हमला थाल दिया। उन दिनों अजमेर जोधपुर राज्य में था। आसोप के ठाकुर महेशवासजी कू पावत ने उनका मुकाबला किया। ये चार हजार घुडसवार गोले उगलती हुई तोपों को चीरकर मरहठों की सेना पर टूट पडे मरहठे तितर वितर होकर भागने लगे। इस समय डियोम का चातुर्य काम कर गया। उसने तोपों के मुंह फेर दिये। ये चार हजार सभी वीर सैनिक युद्ध क्षेत्र मे सो गये।

कर्नल टॉड ने फ्रास में जव जगरल डिवोय से मुलाकात की तो इस सग्राम को उसने बडे ही ओजस्वी शब्दों में याद किया। चनरल डिवोय ने फ्रांसीसी भाषा मे अपने सस्मरण लिखे हैं। उन सस्मरणों की पुस्तक मे इस लडाई का विस्तृत वर्णन किया गया है। उपरोक्त आठ दोहे ठाकुर महेशवासजी के कीर्ति स्तम्भ है।

दिया सत्रुवा दाह, साचा भड़ रखिया सदा
लाखा सीस लियाह, वाज्या धन धन सीसवद

राणा ने हमेशा सच्चे और परखे हुए योद्धाओ को अपने साथ रखा। शत्रु को दलित कर लाखो शीश लिए। लाखो शीश लेने के कारण ही तो मे शीशवद (शिशोदिया) कहलाने लगे हैं।

उरा थरिन्दा आपणा, सीस घुणिन्दा साह
रूप रखिन्दा राण रा, वाह गिरिन्दा वाह

मेवाड वासियो को दृढतापूर्वक मुकावला करने में सहायता देने वाली इन गिरि मालाओ को देख देख वादशाह सिर धुनते रहे।

मेवाड धरा और महाराणा के सम्मान की रक्षा करने वाले पर्वत, तुम धन्य हो।

धर वाकी दिन पाधरा, मरद न मूकै माण।
घणा नरिन्दा घेरियो, रहै गिरदा राण॥

पराक्रमपूर्ण मेवाड की विकट भूमि में रहने वाले स्वाभिमानी एव अपनी आन वान के लिए अड़े रहने वाले राणा के दिन भाग्यशाली हैं। वहुत से राजाओ से घिरा हुआ नर केशरी राणा गिरि शिखरो पर है।

अकवर जासी आप, दिल्ली पासी दूसरा।
पुनरासी परताप, सुजस न जासी सूरमा॥

अकवर स्वय नष्ट हो जायगा और दिल्ली दूसरे शासक के आधिपत्य में चली जायगी, पर हे पुण्यराशि वीर प्रताप, तुम्हारा सुयश कभी भी समाप्त नहीं होगा।

गिर पुर देस गमाड, भमिया पग पग भाखरा ।
मह् अजसै मेवाड, सह् अजसै सीसोदिया ।।

पर्वतो, नगरो और मारे देश को खोकर राणा प्रताप विकट पहाड़ो मे पैदल भटकते फिरे । उनके इन्ही कृत्यो पर तो मेवाड की भूमि गर्व करती है और उनके वशज शिशोदिया गौरवान्वित है ।

समदर पूछै सफ्फरा, आज रतबर काह्
भारत तणै उमेदसी, खाग भकोळी आह्

समुद्र, क्षिप्रा नदी से पूछता है, तू आज लाल क्यो दिखाई दे रही है ?

क्षिप्रा बोली, उम्मेदसिंह ने युद्ध कर अपनी रक्त सनी तलवारें मेरे पानी मे धोई इसलिए लाल हो गई हूँ ।

राह्व उट्ठ कमाणगर, मूंछ मरोड म रोय ।
मरदा मरणो ह्क्क है, रोणो ह्क्क न ह्रोय ।।

हे धनुषधारी राह्व, उठ, मूछो को मरोड रो नही । वीरो को तो लडकर मरना ही शोभा देता है, बच्चो की तरह रोना नही ।

राह्व साह्ब नाम के दो भाई मुस्लिम काल के प्रसिद्ध वीर थे । इनका आख्यान राजस्थान और गुजरात मे विभिन्न रूपो में प्रचलित है ।

लोला थारे पाव ने, सोने को खुरताळ
पग पूजूं रैवत तणा, भेंटायो भरतार

नीले अश्व, तेरे पावो मे सोने की खुरताल जडाऊ । मैं तो इस घोडे के पाव पूजती हूँ । जिसने मुझे अपने पति से मिलाया । इसी की वदौलत मैं अपने प्रिय से मिल सकी ।

जग नगारा जाण रव, अणि धगारा अग ।
तग लियता तडियो, तोनै रग तुरग ॥

युद्ध के नगाडो की ध्वनि को पहचान कर तुम्हारे अङ्ग उत्तेजित हो उठे हैं, और तग कसते ही तुम ताण्डव नृत्य करने लगते हो। तुरग, शावास ।

एरण खटक्को म्हे सुण्यो, लोहो घडे लुहार
सूरा सारू सेलडो, भूंडण सारू भाल

लुहार के लोह घडने की आवाज आ रही है । सूअर की शिकार करने के लिए सैल और शूकरी के लिए भाला गढ़ा जा रहा है ।

सूरो सूतो झाड में, भू डण पैरा देय ।
जाग निदाळु सायवा, कटक हिळोला लेय ।।

शूकर झाड की छाया में निद्रा ले रहा है। भू डण पहरा दे रही है। चढ़कर आये हुए दल को देखकर पति को जगाते हुए कहती है निद्रालु पति ! उठो, शत्रु दल तुम्हारे ऊपर आ रहा है।

पाळा मारू पांच सौ, पाखरिया हजार
गेद गुडादू ट्रूंड सू, भू डण रो भरतार

शूकर कहता है, पाच सौ पैदल और हजार घोडो को मारकर भगा दू, हाथियो को अपनी ट्रूंड से गिरा दू । मैं तुम्हारे जैसी वहादुर शूकरी का पति हूं ।

फोजा दळ नै फेरवा, जीतण ऊभो जंग
चंपा वरणी दातळी, भरी कसूमल रंग

शूकर, शिकारियो के दल को भगाने के लिए विकराल रूप किये विजय प्राप्त करने को युद्ध भूमि मे खडा है। उसकी चम्पा के से रंग की दातली, शोणित से सनी कसूमल रग की हो गई है।

साण चढै ज्यू रीस वढै, फेंकै आग फुवार।
कर सिकलीगर कपतै, थनै रग तरवार ॥

तलवार को ज्यो ज्यो सान पर चढाते हैं त्यो त्यो वह अधिक क्रोधित होती जाती है। उसमें से आग की लपटें निकलने लगती हैं। सिकलीगर के हाथ मे ही वह कापने लगती है, युद्ध के लिए आतुर हो उठती है। तलवार, तू धन्य है।

७ नागी तिय पर नर निरख, सकुचावै सौ वार।
अरि निरखत मारै अवस, थनै रग तरवार ॥

२ नग्न स्त्री तो किसी पुरुष को देखकर सहम जाती है पर नगी तलवार तो शत्रु पुरुषो को देखते ही उन पर तडफ कर पडती है और मार कर ही छोडती है। तलवार, तू धन्य है।

८ ससतर बिय सूधा रहे, वाका वहती वार।
रात दिवस बाकी रहे, थनै रग तरवार ॥

और सारे शस्त्र तो सदा सीधे रहते हैं, केवल वार करते समय ही बाके वहते हैं। पर तलवार तो रात दिन हर समय ही वाकी रहती है। तलवार, तू धन्य है।

हथळेवो तो सू हुयो, जुद्ध वण्यो झू झार
साथ रही रणसेज मे, थनै रग तरवार

मैंने तुझसे हथळेवा जोडा, पाणिग्रहण किया और मैं युद्ध मे जूझार हो गया, शहीद वन गया। तू रण शैय्या मे भी मेरे साथ ही रही, मुझे छोडा नही। तलवार, तू धन्य है।

आता दीसै अरि उमग, ताता चढ तोखार।
रूधिर धार दीजै अरघ, थनै रग तरवार।।

तेज घोडो पर चढकर जब अरिगण उल्लसित होकर आक्रमण करने को चढे आते हैं उस समय यह तलवार रुधिरधार से उनको अर्घ्य देती है। तलवार, तू धन्य है।

0 पग पग भम्या पहाड, धरा छाड राख्यो धरम।
'महाराण' र 'मेवाड' हिरदै वसिया हिंद रे।।

मेवाड के महाराणा ने देश और धर्म के खातिर कई प्रकार के कष्ट उठाये, पहाडो में और वनो मे भटकते रहे। राज्य का मोह और प्रलोभन को छोडकर उन्होंने धर्म और सत्य को निभाया। इसलिए "महाराणा" और 'मेवाड" ये दो शब्द सारे भारत के हृदय में वस गये हैं।

घण घलिया घमसांण, राणा सदा रहिया निडर।
पेखता फुरमाण, हल चल किम फतमल हुवै ॥

इस मेवाड की भूमि पर एक वार नही अनेक वार भीषण युद्ध हुए। पर मेवाड के महाराणा मदा निडर रहे। फतहसिहजी, आज अग्रेजो का एक मामूली सा फरमान पाकर यह हलचल कैसे हो गई ?

गिरद गजा घमसाण, नहचै घर माई नही।
मावै किम महाराण, गज दो सौ रा गिरद मे ॥

युद्ध क्षेत्र में मेवाड के हाथी घोडो के पावों से जो धूल उडती थी, वह सारी पृथ्वी मे नही समा पाती थी। उसी मेवाड का महाराणा आज अग्रेजो का हुक्म पा अपने को दिल्ली दरबार के दो सौ गज के घेरे मे समेटने की चेष्टा करेगा।

औरा नै आसाण, हाका हरवल हालणो।
किम हालै कुळराण, हरवल साहा हकिया ॥

दूसरे राजा महाराजाओ के लिए तो आसान है कि वे शाही फौज के आगे आगे चलें।

मेवाड के महाराणा शाही सेना के आगे कैसे चलेगा ? उसके पूर्वजो ने तो शाही सेना को अपनी हरावल मे हांका है।

नरियद सह नजराण, झुक करसी सरसी जिका ।
पसरेलो किम पाण, पाण थका थारो फता ॥

दिल्ली दरबार में, विदेशी सल्तनत के आगे, देश के अन्य सभी राजा, झुककर नजराना पेश करेंगे । हे मेवाड के महाराणा, हाथ में तलवार होते हुए भी, तुम्हारा हाथ नजर पेश करने के लिए कैसे बढ़ेगा ?

सकळ चढावै सीस, दान धरम जिणरो दियो ।
सो खिताव बगसीस, लेवण किम ललचावसी ॥

मेवाड सारे भारत की प्रतिष्ठा है । उसके दिये हुए दान, बखशीश को सभी ने सिर पर चढ़ाया है । उसी मेवाड का महाराणा, अंग्रेजो से खिताब की बख्शीश लेने को दिल्ली जायगा ?

सिर झुकिया सह साह, सीहासण जिण सामने ।
रळणो पंगत राह, फाबै किम तोने फता ॥

यह मेवाड ही का राज्य सिंहासन था, जिसके आगे विदेशी शासको का गर्व खर्व हो गया, उन्होंने मेवाड के आगे सिर झुका दिया ।

हे महाराणा फतहसिंहजी, उसी दिल्ली दरबार मे, औरो की देखा-देखी जाना आपको शोभा देगा ?

देखेलो हिन्दवाण, निज सूरज दिस नेह सू ।
पण तारा परवाण, निरख निसासा नाखसी ।।

सारा हिन्दुस्तान मेवाड़ के महाराणा को अपना सूर्य मानता है। वही सूर्य जब अंग्रेजो का दिया हुआ खिताब (Star) लेकर तारे के रूप में शेष रह जायेगा तब सारे देशवासी ठण्डी निसासें भरेंगे।

देखे अंजस दीह, मुळकैलो मन ही मना।
दभी गढ दिल्लीह, सीस नमता सीसवद ।।

मेवाड का महाराणा, दिल्ली के उस किले मे जाकर जब सिंहासन के आगे झुक कर सलाम करेगा। उस समय दिल्ली का अभिमानी किला मन ही मन मुस्कुरा उठेगा। यह व्यग भरी मुस्कुराहट तुम कैसे सहन करोगे।

अन्त बेर आखीह, पातळ अँ बाता पहल।
राणा सह राखीह, जिण री साखी सिर जटा ।।

अन्त समय में राणा प्रताप ने जो प्रतिज्ञायें की थी उन सब को सभी राणाओ ने आज तक निभाया है। जिसकी साक्षी तुम्हारे सिर की जटा है। अपनी जटा को देखो और प्रताप की प्रतिज्ञा एव मेवाड के गौरव को याद करो।

कठण जमानो कोल, बांधै नर हीमत विना ।
वीरा हन्दा बोल, पातळ सांगे पेखिया ।।

विना हिम्मत के पुरुष ही कहा करते है कि जमाना नाजुक है, प्रतिज्ञा निभाना कठिन है, पर राणा सागा और प्रताप ने वीरोचित वचनों को कष्ट उठाकर भी निभाया ।

अब लग सारा आस, राण रीत कुळ राखसी ।
रहो साय सुखरास, एकळिंग प्रभु आपरै ।।

अब तक हम सभी को यह आशा है कि आप महाराणा कुल की वंश परम्परागत मर्यादा को अक्षुण बनाये रखेंगे । सुखराशि को प्रदान करने वाला एकलिंग प्रभु पालन करने में कर्तव्य आपकी सहायता करे ।

मान मोद सीसोद, राजनीत बळ राखणो ।
गवरमिन्ट री गोद, फळ मीठा दीठा फता ।।

हे शीशोदिया वंश के महाराणा, अपने मान और मर्यादा को अपने राजनैतिक बल पर कायम रखो । अंग्रेजी साम्राज्य की गोदी में रखे मीठे फलों की ओर मत देखो, यह भ्रम है ।

उपरोक्त तेरह सोरठे 'चेतावणी के चूंगट्या' नाम से प्रसिद्ध हैं । दिल्ली दरबार मे महाराणा फतहसिंहजी को जाते देख बारहठ केशरीसिंहजी ने ये सोरठे लिख भेजे । फलस्वरूप, महाराणा दिल्ली दरबार मे नहीं गये ।

ध्रक हेली वो देसडो, लागो उण घर लाय।
वीरा री वेट्या जठै, कायर जोय कहाय ॥

हे सखी, उस देश को धिक्कार है और आग लगे उस घर को जहा वीर माता पिता की पुत्री को कायर की पत्नी कहा जाता है।

जीमण पात जठेह, मिल भड आवे मोकळा।
तणिया खाग तठेह, माडे पैड न मोतिया ॥

कवि मोतिया कहते हैं, जहा जीमने की पात लगी होती है वहा वहुत से सुभट आ जाते हैं। पर जहा खागें तनती हैं वहा आने को कोई पांव नही वढाता।

मंजन करे सधीर मन, सूरा धारा सार
कायरडा मजन करै, आसू धार मभार

शूरवीर पुरुष तो तलवारो की धाराओ मे स्नान करते हैं। पर कायर पुरुष आसू की धारा में स्नान करते हैं।

अदत्ता केरी अत्थ ज्यूं, कायर री करमाळ।
कोढ पकारा कोस सू, नह पावै नीकाळ।।

कृपण के धन की भाति ही कायर की तलवार भी होती है।

न तो कृपण ही अपने धन को कोष से निकाल सकता है और न कायर ही तलवार को कोष (म्यान) से।

मूंछ नाक सिर रो मुकट, ससतर साम सनाह
सावत लायो समर सू, कै नह लायो नाह

कायर युद्ध भूमि से भाग कर घर पहुँचता है तो पत्नी व्यंग से पूछती है, स्वामी, मूछ, नाक पाग शस्त्र और कवच को हिफाजत से तो ले आये हो न ?

मूछ केस खंडत नही, नाक न खडत कोर।
पडो पुळता पाघडी, सुकुलीणी तज मोर।।

कायर उत्तर देता है, मूछ का एक बाल भी खंडित नही हुआ, नाक भी सावत है। कुलीनी, शोर मत कर, भग कर कूदते वक्त केवल पगडी गिर गई थी ।

आ पडिया मो जैथ अरि तजिया समतर तेथ
लागा धघे लैण रे, आयो कुसळ गथ

मुझ पर शत्रुओ ने आक्रमण कर दिया तो मैने शस्त्रो को फैंक दिया। वे मेरे शस्त्र उठाने मे लगे तब तक मैं यहा कुशलपूर्वक आ पहुँचा।

कत घरे किम आविया तेगा री घरा तास।
लहगै मूझ लुकीजिये वैरी रो न विसास॥

हे प्रिय, तलवारो के डर से भयभात होकर तुम भाग कर यहा तक कैसे आ सके। शत्रु का विश्वास नही, शायद तुम्हारी खोज मे वह यहा भी आ जाये, अत मेरे लहगे मैं छिप जाओ। वीर स्त्री व्यग द्वारा अपने कायर पति को धिक्कार रही है।

सेहणो सव री हू सखी, दो उर उळटी दाह।
दूध लजाणो पूत सम, वळय लजाणो नाह॥

हे सखी, मैं और सव कुछ सहन कर सकती हू, पर ये दोनो हृदय मे विपम जलन पैदा कर देते हैं, दूध को लज्जित करने वाला पुत्र और चूडियो को लज्जित करने वाला पति।

मणिहारी जा री सखी, अब न हवेली आव।
पिव मूवा घर आविया, विधवा किसा बणाव।।

हे सखी, मनिहारी, अब मेरे घर न आना। मेरे पति पराजित होकर घर लौटे हैं, अत मरे हुए के समान ही हैं। विधवाओ का शृगार कैसा।

यो गहणो यो वेस अब, कीजै धारण कन्त।
हू जोगण किण काम री, चूडा खरच मिटन्त।।

युद्धस्थल से पराजित होकर लौटे हुए अपने कायर पति को धिक्कारती हुई वीर पत्नी कह रही है, हे कन्त, मेरे शृगार के ये गहने और ये वस्त्र अब तुम पहन लो। मैं तो अब जोगन हो जाऊंगी, अत तुम्हारे कोई काम की नही। अच्छा हुआ चूडियो का खर्चा भी मिट जायेगा।

बिन मरिया बिन जीतिया, धणी आविया धाम।
पग पग चूडो पाछटू, जे रावत री जाम।।

यदि मेरे पति युद्ध भूमि मे लडकर प्राण न देंगे और पराजित होकर घर लौट आवेंगे तो हे सखी, यदि मैं वीर रावत की सन्तान हू तो उनके घर की ओर बढने वाले प्रत्येक पैर पर अपनी चूडिया तोड तोड कर फैंक दूंगी।

पीळ कढ्या पग लडखडै, घर वारै घिंघियाय।
पडदै पूरी पदमण्या, जोधा किण विध जाय ।।

दरवाजे से वाहर पैर रखते ही जिनके पैर लटखडाते हैं और घर के वाहर निकलते ही तो घिग्घी वध जाती है, ऐसी परदे मे रहने वाली पद्मिनी स्त्रियां (?) योद्धाओ को किस प्रकार जन्म दे ।

रूळगी रजपूताणिया, खूटी रतना खाण ।
पूथळिया अव प्रेम री प्रसव रहो पाखाण ।।

राजपूतानिया अव नही रही है, रत्नो की खानें समाप्त हो चुकी हैं । अव तो प्रम (?) की पुतलिया शेप रही है जो पत्यरो को जन्म दे रही हैं।

है सिंघणिया आज लग, निरवीजां घर नाह।
वस उजाळक वाहुडी मिलै भूपडा माह ।।

पृथ्वी वीजरहित नही हो गई है, वीर प्रसविनी सिंहनियां आज भी विद्यमान है । वश को उज्ज्वल करने वाली ऐसी वधुयें गरीवो की झोपडियो मे ही मिलती हे ।

सावरा आयो सायबा, पगा विलूंवी गार।
तरा विलूंवी वेलड्या, नरा विलूंवी नार।।

हे स्वामी, सावन आ गया है और गीली मिट्टी पैर से चिपटने लग गई है। वल्लरिया वृक्षो के गले लग रही हे और स्त्रिया पुरुषो का आलिङ्गन कर रही हैं।

च्यारू पासै घरा घरो, वीजळ खिवै अकास।
हरियाळी रित तो भली, घर सपत पिव पास।।

चारो ओर घने वादल घिर रहे हैं और आकाश में विजलिया चमक रही हैं। यह हरी भरी ऋतु तो तभी अच्छी लगती है जब घर में सम्पत्ति हो और प्रियतम पास में हो।

लूमा झड नदिया लहर, वग पगत भर वाथ।
मोरा सोर ममोलिया, सावरा लायो साथ।।

निरन्तर वर्षा की झडिया, नदियो की लहरें वक पक्तियो के समूह, मोरो का शोर और लाल रग की वीर वहूटी, ये सव सावन अपने साथ लाया है।

हरणो मन हरियाळिया, उर हाळिया उमंग ।
तीज परव रग त्यारिया, सावण लायो सग ।।

हरिनी के मन के लिए हर्ष, खेतो में काम करने वालो के लिए उमग और तीज का त्योहार मनाने की सुन्दर तैयारिया, ये सब सावन अपने साथ लाया है ।

आभ गडै वीजा अडै, मोरा घरै मलार ।
कामण धरा धपाडवा, आयो मेह उदार ।।

बादल गरज रहे हैं, बिजलिया चमक रही हैं और मोर मस्ती मे नाच रहे है। कामिनी धरा को तृप्त करने के लिए उदार मेह आ गया है ।

मोर सिखर ऊचा मिलै, नाचै हुआ निहाल ।
पिक ठहकै झरणा पडै, हरिये डूगर हाल ।।

जिसके ऊचे ऊचे शिखरो पर मोर मुदित होकर नाच रहे हैं जहां कोयल की काकली और निर्झर का सगीत हो रहा है, हे प्रियतम, उस हरियाली से आच्छादित पर्वत पर चलो ।

घन घोरा, जोरा घटा, लोरा वरसत लाय।
वीज न मावै वादळा, रसिया तीज रमाव॥

हमारे खेतो मे अपार अन्न लहलहा रहा है, वर्षा की घटायें उमड घुमड कर छा रही है और पानी के लोर निरतर वरस रहे हं। विजली भी अधीर होकर वादलो मे नही समाती है। हे रसिक, शीघ्र ही आओ, हम तीज का उत्सव मनायें।

घर घर चगी गोरडी, गावै मगळाचार।
कथा मती चुकावज्यो, तीजा तणो तिवार॥

घर घर मे सुन्दर युवतिया मगलगान गा रही हं। हे प्रिय, तीज के इस त्योहार पर आना भूल न जाना।

आज ऊवेळा उनमियो, मेड़ी ऊपर मेह।
जाऊ तो भीजै काचळी, रैवु तो टूटे नेह॥

आज कैसे असमय ही में मेह वरसने लगा। प्रिय के पास जाती हूं तो मेरी कचुकी भीग जावेगी। नही जाती हूं तो मेरे स्नेह में दुर्वलता आती है।

पावस रित झड मडियो, चातक मोर उलास
वीजळिया झबके जसा, विरही अधक उदास

पावस रितु में मेह की झडी लग रही है। विजली चमक रही है। चातक मोर उल्लसित हो रहे हैं।

कवि जसराज कहते हैं, इस रितु में विरही वडे उदास हो जाते हैं।

वीजळिया झबके जसा, काळी काठळ माय
आव सनेही सायवा, जोवन रा दिन जाय

क्षितिज के ऊपर काली घटा में रह रह कर दामिनी दमक रही है। जसराज कहते हैं, ओ स्नेही प्रियतम, आओ। यौवन के दिन वीते जा रहे हैं।

काळो काजळ सारखो, घटा मडाणी आज
आजूणी निस एकला, जासी किम जसराज

काजल सी काली घटाओ ने सारे आकाश को ढंक लिया है। जसराज कवि कहते हैं, आज की रात्रि अकेले किस प्रकार व्यतीत होगी।

पड पड बूंद पलंग पै, कड कड वीज कडक्क
सायधण सेजा एकली, धड धड हियो धड़क्क

पलंग पर पड पड करती मेह की बूंदें पड रही हैं। कड कड करती हुई कर्कश विजली कडक रही है।

सायधण (पत्नी) अकेली शय्या में है, उसका हृदय धड धड धडक रहा है।

आज धरा दिस ऊनम्यो, काळी घड सिखराह।
वा धण देसी ओळमा, कर कर लाबी वाह ॥

आज वर्षा की काली घटायें पर्वत शिखरो पर से उमड घुमड कर उठती आ रही हैं। ऐसे समय में यदि मैं उस प्रेयसी के पास न पहुँचा तो वह लम्बी वाहें कर कर के मुझे उलहनें देगी।

भों भीनी, घोडा भला, डावर ऊपडियाह।
(का) मिरगानैणी माणवा,(का)खग वावा खड़ियाह ॥

भूमि भीगी हुई है, तालाव भरे हुए हैं और तेज घोडा है। ऐसे समय मे यह पुरुष कहा जा रहा है ? दूसरी सखी कहती है या तो मृगनयनी के साथ आनन्द करने के लिए अथवा युद्ध मे तलवार चलाने के लिए यह घर से निकला है।

नाळा नदिया सू मिलै, नदिया सागर जाय।
विरछा सूं वेला मिलै, ऐसी सही न जाय॥

नाले नदियो से मिल रहे हैं, नदिया दौडकर सागर का आलिंगन कर रही हैं और वल्लरिया वृक्षो से लिपट रही हैं। ऐसे समय में हे प्रियतम, तुम्हारा विरह असह्य हो उठता है।

वीजळिया नीलज्जिया, जळहर तू तो लज्ज।
सूनी सेज विदेस पिव, मधरो मधरो गज्ज॥

विजलिया तो निर्लज्ज हो गई हैं, हे जलधर, तू तो लज्जित हो। मेरे प्रिय परदेश हैं, शय्या उनके विना सूनी है, अत धीरे धीरे गरज ! जोर से गरज कर मुझ अकेली को डरा मत।

आसी सावण मास, वरखा रुत आसी वळे।
साईना रो साथ, वळे न आसी वीझरा॥

सावन का महिना फिर आयेगा और वर्षा ऋतु भी फिर आयेगी परन्तु हे वीझरा, बचपन के मित्रो का साथ फिर कभी न आयेगा।

आज घरा दिस ऊमग्यो, मोटी छाटा मेह।
भीजी पाग पधारस्यो, जद जाणू ली नेह॥

आज चारो ओर से मोटी छाटो का मेह उमड रहा है। हे प्रिय, यदि भीगी हुई पगडी से आज घर आओगे तभी समझूगी कि तुम मुझे वास्तव में प्रेम करते हो।

सावण आयो सायबा, सब वन पागरियाह।
आव विदेसी पावणा, अे दिन दूभरियाह॥

हे प्रिय, सावन आ गया है और सब वन पल्लवित हो गए हैं। हे परदेशी प्रियतम, ये दिन तुम्हारे बिना दूभर हो रहे हैं।

जे तूं साहव नावियो, मेहा पहलै पूर।
विचै वहेसी वाहळा, दूर स दूरे दूर॥

हे प्रिय, यदि वर्षारम्भ से पहले तुम नही आवोगे तो फिर तुम्हारे मार्ग मे अनेक नाले बहने लग जायेंगे और हमारे बीच की दूरी और भी बढ जायगी।

सावण आयो सायवा, मोर हुया महमत।
इण रित पीयर मोकळै, कठण हिया रो कन्त ॥

हे प्रिय, सावन आया है मोर प्रमत्त हो गये हैं। ऐसे समय में मुझे पीहर भेजने वाला प्रियतम वास्तव म कठोर हृदय का है।

काळी काठळ बादळी, बरस ज बाजै बाव।
पिव बिन लागै बूंदडी, जाण कटारी घाव॥

घने काले मेघ बरस रहे हैं और ठण्डी हवा चल रही है। प्रियतम के बिना ये बूंदें कटारी के घाव के समान कष्टप्रद प्रतीत होती हैं।

जळ नदिया बीजा जसा, गिणै न जळ थळ घाट
आवे राजिद प्रीतवा, वाजिद खडिया बाट

जल भरी नदिया वह रही हैं, अन्धेरी रात मे बिजली चमक रही है। प्रेम मे बंधा हुआ प्रियतम, ऐसे समय मे जल थल की परवाह किये बिना ही घोडा दौडाता आ रहा है।

घरा दीहा विघटी घरा, उमडियो अनुराग
इण घर मिलरा उमाहियो, हुवो विभियो सुरराज

प्रेयसी धरती से कई दिनों से विछोह हो जाने के कारण इन्द्र के हृदय में अनुराग उमड पड़ा है।

सुरराज धरा से मिलने विह्वल हो उमड पड़ा है।

सावरा आयो सायवा, वाधो पाग सुरग।
घर वैठा राजस करो, हरिया चरै तुरग॥

प्रियतम, सावन आ गया है, सुरगी पगडी वाधो, अब घर वैठे आनन्द करो। अपने घोडो को हरा चरने खुला छोड दो।

सावरा लागो सायवा, गाढा माणा रग।
आणा घर जाणा नही, ठाणा वाध तुरग॥

प्रियतम, सावन का महिना आ गया है। हम खूब आनन्द करें। अपने घोडो को अस्तवल मे वाधो। इन दिनो कोई वाहर जाता नही, प्रवासी भी घर आ जाते हैं।

सजन सिकारा जावसी, नैणा मरसी रोय ।
विधना ऐसी रैण कर, भोर कदे ना होय ।।

प्रभात होते ही मेरे साजन शिकार के लिए जायेंगे और उनके इस विछोह मे मेरे ये पागल नयन रो रोकर मर जायेंगे । हे विधाता, रात्रि को इतनी लम्बी कर दो कि कभी प्रभात ही न होने पाये ।

ढोलो हल्लाणो करै, धण हल्लवा न देय ।
झब झब झूवै पागडै, डब डब नयण भरेह ।।

ढोला जाना चाहता है पर वह धन्या जाने नही देती । वह पागडे को पकड पकड कर लटकती है और उसकी आखो में आसू भर भर आते हैं ।

सज्जण चाल्या हे सखी, नयणा कीधो सोग
सिर साडी गळ कचुवो, हुआ निचोवण जोग

सखी, प्रियतम विदा हो चले गये तो मेरे नयनो ने भी शोक मनाया । वे इतने रोये, मेरे सिर की साडी और कचुकी आसुओ से भीग कर निचोडे जाने जैसी हो गई ।

ऊभी थी रायागणँ, सायब साभरियाह।
च्यारू पल्ला चूनडी, आसू जळ भरियाह॥

आगन मे खडी हुई प्रियतमा को अपने पति की स्मृति आई तो उसकी चु दडी के चारो छोर आसुओ के जल से तर हो गये।

•

वै परदेसी वालमा, गया प्रीतडी तोड।
वरणजारै री आग ज्यूं, हियो सुलगतो छोड॥

वह परदेशी प्रियतम प्रीत तोडकर चला गया। जैसे वनजारा मार्ग मे जलाई हुई अग्नि को जलती हुई छोडकर आगे चल देता है वैसे ही वह निष्ठुर मेरे प्रेमातुर हृदय को विरह से दग्ध करके जलता हुआ ही छोड गया।

•

चाल सखी उण मदिरे, प्रियतम रहिया जेण।
कोईक मीठो वोलडो, लाग्यो होसी तेण॥

हे सखी, मुझे उस भवन मे ले चल जहा प्रियतम ने निवास किया है। शायद उनके किसी मीठे वोल को भीत के जड हृदय ने चिपका रखा हो।

साल्ह चलता हे सखी, गोखं चढ मै दीठ।
हियडो वा ही सू गयो,नैण वहोड्या नीठ॥

हे सखी, गवाक्ष पर चढकर मैंने साल्हकु वार (ढोला) को जाते हुए देखा। मेरा हृदय उनके साथ ही चला गया और आखो को मैंने वडी कठिनाई से लौटाया।

सजन सिधाया हे सखी, झीणी ऊडै खेह।
हियडो बादळ छाइयो, नयण टबूके मेह॥

हे सखी, साजन चले गये और आकाश मे झीनी झीनी गर्द छा गई। हृदय मे दु ख के वादल छा गए और आसुओ के मिस मेह वरसने लगा।

जिणि दिसि मो सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाव।
वा लागी म्हा लागसी, वो ही लाखपसाव॥

हे वायु जिस दिशा में मेरे प्रियतम रहते हैं उस ओर से वह। उनका स्पर्श करके जब तुम मेरे अङ्गो का स्पर्श करोगे, मेरे लिए वही "लाखपसाव" होगा।

प्राचीनकाल मे राजा लोग प्रसन्न होकर "लाखपसाव" नामक पारितोषिक देते थे। इसमे घोड़ा, हाथी, वस्त्र तथा नकद रुपये आदि देते थे।

चदा तो किण खडियो, मो खडी करतार।
पूनम पूरो ऊगसी, आवतइ अवतार ॥

चन्द्र, तुम्हे किसने पूर्णता से खडित कर दिया ? मुझे तो भाग्य ने खडित किया है। पूर्णमासी आते ही तुम तो फिर पूर्ण हो जावोगे, पर मेरा किसे पता ? यदि पति न आये तो मैं तो अगले जन्म मे ही पूर्ण होऊंगी।

ढोला हूं तुझ बाहिरो, झीलण गई तळाइ
ऊ जळ काळा नाग जूं, लहरा ले ले खाइ

ढोला, मैं एक दिन तुम्हारे विना सरोवर पर स्नान करने गई थी, तुम्हारे विरह में वह जल काले नाग की तरह लहरा कर मुझे काटने लगा।

प्रीतम तोरे कारणे, ताता भात न खाय
हिवड़ा भीतर प्रिय वसै, दाझवती डरपाय

प्रियतम, तुम्हारे कारण मैं गर्म भात भी नही खाती, हृदय में तुम बसे हुए हो, कही गर्म गर्म भात खाने से तुम जल न जाओ, इसलिए डरती रहती हूं।

आव विदेसी वल्लभा, ना विसरू हियाह
नैणा दाडम फूल ज्यू , रोय रोय लाल कियाह

परदेशी प्रीतम, चले आओ । एक क्षण भी तुम्हें भूल नही सकती । तुम्हारे वियोग मे रो रोकर ये नयन अनार पुष्प की भाति लाल लाल हो गए हैं ।

सुपने मे प्रीतम मिल्या, हू लागी गळ रोय
डरपत पलक न खोल ही, मत विछोहो होय

स्वप्न मे मुझे प्रियतम मिले, मैं उनके गले लग कर रोने लगी, अब पलक खोलते हुए डर लग रहा है कि कही विछोह न हो जाय ।

जिण ने सुपने देखती, प्रगट भया पिव आय
डरती आख न मू दही, मत सुपनो हुय जाय

जिस प्रिय को मैं सपने में देखा करती थी वह आज साक्षात मेरे आगे खडे हैं ।

डर के मारे मैं पलक ही नही मू दती, यह प्रत्यक्ष मिलन कहीं सपना न हो जाय ।

सुपना तोहि मरावसू , हिये दिरावूं छेक
जद सोवू तद दो जणा, जद जागूं तद एक

स्वप्न में तुम्हें मरवा डालूंगी तुम्हारे कलेजे मे छेद करवा दूंगी। जब मैं सोती हूं तब तो हम दो हो जाते हैं, जागते ही फिर अकेली रह जाती हूं।

हूता सखी मो हीवडै, सयणा हंदा हत्थ
जो सपनो साचो हुवै, सपनो वडी वसत्त

सखी, मैंने स्वप्न में देखा प्रियतम के हाथ मेरे हृदय पर हैं। काश यह स्वप्न सच्चा हो जाय तो वास्तव में स्वप्न एक महान वस्तु है।

सुपने प्रियतम मुझ मिल्या, हू लागी गळ रोय।
डरपत पलक न खोल ही, मत सपनो हो जाय॥

स्वप्न में मुझे प्रियतम मिले। मैं उनके गले लग कर रोने लगी। पलक खोलते हुए डर लग रहा है कि कहीं यह सपना न निकल जाय।

सुपनो श्रायो फिर गयो, मैं सर भरिया रोय ।
श्राव सुहागरा नीदडी, वळि पिउ देखू सोय ॥

स्वप्न श्राया श्रौर चला गया, मैंने रो रोकर तालाव भर दिये । हे
ुहागिन नीद, एक वार फिर श्राश्रो जिससे सोकर मैं श्रपने प्रियतम को
वप्न मे फिर देखू ।

सपना तू सोभागियो, उत्तम थारी जात ।
सो कोसा साजन वसै, श्राण मिलावै रात ॥

हे स्वप्न, तू सौभाग्यशाली है, तेरी जाति उत्तम है । जो प्रिय सौ
ोस दूर रहते हैं उनको तू रात्रि मे लाकर मुझसे मिला देता है ।

पथी हाथ सदेसडो, धरा विळळती देह ।
पग सू काढै लीहटी, उर श्रासुवा भरेह ॥

विरह के शोक से विह्वल होकर वह धन्या पथिक के हाथ सन्देश
पने प्रियतम के पास भेजती है । वह पैर के नखो से धरती पर लकीर
ीच रही है तथा उसका हृदय श्रांसुश्रो से पूर्ण हो रहा है ।

कागळ नही क मस नही, नही क लेखण हार ।
सदेसा ही नाविया, जीवूं किण आधार ।।

तुम्हारे पास कागज नही है ? स्याही नही है ? या लिखने वाला ही नही है ? हाय, प्रिय के सन्देश ही नहीं मिल रहे हैं । जीऊं तो किस आधार पर ?

कागज थोडो हित घणो, कूंकर लिखूं वणाय ।
सागर मे पाणी घणो, गागर कोण समाय ।।

कागज छोटा सा है और प्यार बहुत है । अब मैं पत्र कैसे लिखूं ? सागर मे तो अपार जलराशि है पर गागर में नही समाई जाती । उसी भांति अपने अपार प्रेम को कागज से कैसे व्यक्त करू ?

पथी एक सदेसडो, ढोला लग पहुचाय ।
जघा केळी फळ गई, स्वात ज्यूं वरसण आय ।।

पथिक, मेरा एक सन्देश तुम ढोला तक पहुँचा देना, कदली रूपी जघायें फल गई हैं, अब तुम स्वाति की भाति वरसने आओ ।

पथी एक सदेसडो, ढोला लग पहोचाय ।
जोवन खीर समुद्र हुई, रतन ज काढो आय ।।

पथिक, मेरा एक सन्देश ढोलाजी तक पहुँचा देना । उन्हे कहना, यौवन रूपी क्षीर सागर से आकर रत्न निकालें ।

ढाढी एक सदेसडो ढोला लग ले जाय ।
जोवन फाटी तळावडी, पाळ ज बाधो आय ।।

ढाढी, मेरा सन्देश, जाकर ढोलाजी से कहना, यौवन रूपी तालाब, पानी से लबालब भरकर टूटने वाला है । तुम आकर इसकी पाल बाध लो ।

पथी एक सदेसडो, ढोला लग पहोचाय ।
ेबन जायई पावणो, वेगा ही घर आय ।।

पथिक, मेरा एक सन्देश ढोलाजी तक पहुँचा देना । यौवन मेहमान की तरह आता है, वह चला जावेगा । तुम घर आ जावो, अब विलम्ब मत करो ।

ढाढी जे राजद मिले, यूं दाखविया जाय ।
जोवन हस्ती मद चढ्यो, अंकुस ले घर आय ।।

ढाढी, यदि प्रियतम तुम्हे मिल जाय तो उनको यह कह देना, यौवन रूपी गजराज मस्त हो रहा है, अंकुश लेकर घर आवो ।

फागण मास वसंत रुत, आयो जे न सुणेस ।
चाचर कै मिस खेलती, होळी झपावेस ।।

फाग्रुन मास मे वसन्त ऋतु के समय यदि तुम्हारा आना न सुनूंगी तो चाचर के मिस खेलती हुई मै इस शोक मे होली की अग्नि में कूद कर प्राण दे दूंगी ।

बाबहिया निलपखिया, वाढत दे दे लूण ।
पिउ मेरो मैं पीउ की, तू पिउ कहै सो कूण ।।

हे नीली पाखो वाले पपीहे, तू घाव पर नमक जैसी जलन पैदा कर रहा है । प्रिय मेरा है और मैं प्रिय की हूं, प्रिय का नाम लेने वाला तू कौन होता है ?

रात सखी इण ताल मे, काई ज कुरळी पखि ।
वा सर, हू घर आपणैं, वेहु न मेळी अखि ।।

हे सखी, रात को इस ताल में किसी पक्षी ने इस प्रकार क्रन्दन किया कि मेरी अपने घर मे और उसकी तालाव मे, दोनो की ही पलक तक भी न झपी । मालूम होता है यह भी मेरी ही तरह विरह वेदना से कराह रही थी ।

कूंजा द्यो नै पाखडी, थाको विनो वहेस ।
सायर लघी पिव मिलू , पिव मिल पाछी देस ।।

हे कूंजा, तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि अपनी पाखें मुझे उधार दे दो । समुद्र लाघकर मैं अपने प्रियतम से मिलूगी और फिर आकर तुम्हे लौटा दूगी । •

म्हे कुरजा सरवर तणी, पाखा किणहि न देस ।
भरिया सर देखी रहा, उड आघेरि वहेस ।।

हम सरोवर की कूजें हैं, अपनी पाखें किसी को नही देती । जल भरा हुआ देखकर ठहर जाती हैं और फिर उडकर आगे चल देती हैं ।

उत्तर दिस उपराठिया, दक्खण सामुहियाह ।
कुरझा एक संदेसड़ो, ढोलै नैं कहियाह ॥

उत्तर दिशा को पीठ देकर और दक्षिण दिशा की ओर उडकर हे कूंजा, एक सदेश प्रियतम ढोला के पास पहुँचा देना ।

माणस हवा तो मुख चवा, म्हे छा कूं झड़ियांह ।
पिउ सदेसो पाठविस, लिख दे पाखडियाह ॥

यदि मनुष्य हो तो मुख से वोलें, पर हम तो पक्षी हैं । यदि अपने प्रिय को सन्देश भेजना चाहती हो तो हमारे पखो पर लिख दो ।

पाखे पाणी थाहरै, जळ काजळ गळि ज्याई ।
सयणा तणा सदेसड़ा, मुख वचने कहियाई ॥

तुम्हारे पखो पर तो पानी लगता रहता है अत लेख की स्याही गल कर वह जायगी । प्रेमियो के सदेश तो मुह जबानी ही कहे जाते हैं ।

-ाल घोडा उतावळो, दिन थोडो घर दूर
जिवडो उमग्यो ना रहे, प्यारी जोवन पूर

घोडा जल्दी जल्दी चल, साझ होने वाली है और घर अभी दूर है। परिपूर्ण यौवना प्रिया से मिलने को उत्सुक हृदय रोके नही रुकता।

'नोला काई ढीलो वहे, देस पयाणो दूर
पथ निहारे पदमणी, पन्ना ज जोवन पूर

वीरमदे अपने घोडे से कहता है, नीले, क्यो शिथिल गति से चल रहा है। अपने को अभी दूर जाना है। पूर्ण यौवना प्रेयसी पन्ना मार्ग जोह रही है।

।साचो प्रीत सनेह गत, चित्त.मे हित्त छायोह
आछी धण रे कारणे, काछी चढ आयोह

प्रेमपूर्ण हृदय से, प्रेम पथ पर चलता हुआ सच्चा प्रेमी अपनी अच्छी प्रियतमा से मिलने कच्छी घोडा दौडाता हुआ आया।

जाये दासी महल में, गहरो दिवलो जोय।
गळियारा हगमग हुवा, सकं क राजन होय ।।

दासी, जा दीप जला महलो को जगमगा दे। मार्ग मे हलचल हो रही है अवश्य प्रियतम आ रहे हैं।

खमायची रा बाग मे, लखपत उतरियाह
सूळा रहिया साट पै, कूंपा मद भरियाह

लाखा खमायची के वाग में आकर उतरा है। मद के घडे भरे है और सूळे सीको पर सेके जा रहे है।

काग उडावण धण चढी, आयो पीव भड़क्क।
आधी चूडी काग गळ, आधी गई तडक्क ।।

वह नायिका कौए को उडाने के लिए छत पर चढी ही थी कि उसी समय उसके प्रियतम आ गए और प्रसन्नता से उसके अंग प्रत्यग प्रमुदित होकर इतने फूल गए कि उसके हाथ की चूडिया तडक गईं। हाथ से निकल कर आधी चूडिया तो कौए के गले में पहले पड गई थीं।

साहिब आया हे सखी, कज्जा सहु सरियाह
पूनम केरे चाद ज्यू , दिस चारूं फळियाह

सखी, प्रियतम आ गये, मेरे सभी मनोरथ पूर्ण हुए। पूर्णिमा के चन्द्र की भाति चारो दिशाओ को आलोकित कर दिया।

साजन आया हे सखि, हूता मूझ हियाह।
सूका था सो पाल्हविया, पाल्हविया फळियाह ॥

हे सखी, साजन आ गए हैं और मेरा मनचाहा हो गया है। जो वनस्पति सूख गई थी वह अब पल्लवित हो गई है और जो पल्लवित थी वह पुष्पित् हो गई है।

ढोला मारू एकठा, करै कतूहळ केल।
जाणे चदण रू खडा, विलग्गी नागर वेल ॥

ढोला और मारवणि मिलकर कौतूहलपूर्वक क्रीडा करते हुए ऐसे लग रहे हैं मानो चन्दन वृक्ष पर नागर वेलि लिपटी है।

लाज पाज दध लोपियो, वणि रतिराज बसंत
नर, तरवर. घर, नारिया, एता मद चूवत

ऋतुराज वसन्त के आते ही लज्जा रूपी समुद्र ने मर्यादा का उलघन कर दिया। नर, नारी, वृक्ष वल्लरी, धरा, सभी मदमत्त हो गए हैं। सारी प्रकृति ही उद्वेलित हो उठी है।

नैण लाज वैसण न दे, जाण न दे कुंळ लाज।
पलग पोळ विच फिरत ही, प्रात भयो उदैराज।।

नयनो का मोह उस प्रेयसी को चैन से बैठने नहीं देता। प्रियतम के पास जाने को प्रेरित करता है और कुल कान उसको जाने नही देती। वदनामी का डर दिखाती है। उदैराज कहते हैं कि पलग और पोली के बीच में फिरते फिरते ही प्रभात हो गया।

धन पारेवा प्रीत, प्यारी बिण ना खिण रहे
ग्रे मानविया रीत, एखो जसा न एहडी

कबूतर का प्रम धन्य है, वह अपनी प्रिया विना एक क्षण भी नहीं रहता। जसराज कवि कहते हैं, मनुष्यो मे ऐसी प्रीत मुझे तो दिखलाई नहीं पडी।

साहिब आया हे सखी, कज्जा सहु सरियाह
पूनम केरे चाद ज्यू , दिस चारू फळियाह

सखी, प्रियतम आ गये, मेरे सभी मनोरथ पूर्ण हुए। पूर्णिमा के चन्द्र की भाति चारो दिशाओ को आलोकित कर दिया।

साजन आया हे सखि, हूता मूझ हियाह।
सूका था सो पाल्हविया, पाल्हविया फळियाह ।।

हे सखी, साजन आ गए हैं और मेरा मनचाहा हो गया है। जो वनस्पति सूख गई थी वह अब पल्लवित हो गई है और जो पल्लवित थी वह पुष्पित् हो गई है।

ढोला मारू एकठा, करै कतूहळ केल।
जाणे चदण रू खडा, विलग्गी नागर वेल ।।

ढोला और मारवणि मिलकर कौतूहलपूर्वक क्रीडा करते हुए ऐसे लग रहे हैं मानो चन्दन वृक्ष पर नागर वेलि लिपटी है।

जोबन गयो तो जाण दे, तूं मत जाये मूंध
जैं कसतूरी विक गई, तोहि दिवडै सुगध

घर आने के लिये बार बार आग्रह करने वाली व्यग्र पत्नी को व्यवसायिक बुद्धि वाला पति उत्तर देता है, यौवन जाता है तो जाने दे। तू तो कही नहीं जायेगी। यदि कस्तुरी विक भी गई तो भी उसके पात्र में तो सुगधि रहेगी ही।

वरस वळया वादळ वळया, धरती लीलाणी।
वीझाणंद रै कारणै, सयणी सूकाणी॥

वर्ष बीत गये, बादल फिर आए हैं और धरती हरी हो गई है पर वीझाणद के विरह में सयणी सूखती जा रही है।

नागा नगरं गयाह, मनमेळू मिलिया नही।
मिलिया घणा जणाह, जासू दिल रळिया नही॥

हे नागजी, हम नगर गये पर जिनसे मन मिल सके ऐसा कोई न मिला। मिलने को तो बहुत से मिले पर उनसे मन नही मिला।

रूडो जोवन रग चुवै, पायळ वाजै पाय।
चाली सुन्दर चौवटे, जाण पटाभर जाय ।।

पूर्ण योवन है, रग जैसे टपक रहा हो, पावो मे पायल के घुघरु बज रहे हैं, सुन्दरी बाजार को चली जैसे मस्त हाथी जा रहा हो।

बोली बीणा, हस गत, पग वाजंती पाळ।
रायजादी घर आगणे, छूट पटे छछाळ ।।

वीणा जैसे स्वर वाली और हस जैसी चाल वाली चचल रायजादी, घर के आगने मे शोभित है। उसके केशपाश खुले है, पावो मे पायल बज रहे है।

खाता गमे न खाण, पाणी गमे न पीवता
साजन बिन समसाण, जग सगळो दीसे जसा

कवि जसराज कहते हैं, सारा ससार ही प्रिय बिना श्मशान सा लग रहा है। न भोजन ही अच्छा लगता है और न पानी।

जोबन गयो तो जाण दे, तूं मत जाये मूंघ
जै कसतूरी विक गई, तोहि दिवड़ै सुगध

घर आने के लिये वार वार आग्रह करने वाली व्यग्र पत्नी को व्यवसायिक बुद्धि वाला पति उत्तर देता है, यौवन जाता है तो जाने दे । तू तो कहीं नही जायेगी । यदि कस्तुरी विक भी गई तो भी उसके पात्र में तो सुगंधि रहेगी ही ।

वरस वळया वादळ वळया, धरती लीलाणी ।
वीझाणंद रै कारणै, सयणी सूकाणी ॥

वर्ष वीत गये, वादल फिर आए हैं और धरती हरी हो गई है पर वीझाणद के विरह मे सयणी सूखती जा रही है ।

नागा नगर गयाह; मनमेळू मिलिया नही ।
मिलिया घणा जणाह, जासू दिल रळिया नही ॥

हे नागजी, हम नगर गये पर जिनसे मन मिल सके ऐसा कोई न मिला । मिलने को तो वहुत से मिले पर उनसे मन नही मिला ।

खडग धार पर काह, चालै तो चलवो सहल ।
मुसकल जग रै माह, नेह निभाणो नागजी ॥

तलवार की धार पर चलना तो सरल है, पर हे नागजी, ससार में प्रम निभाना बडा कठिन है ।

नागा नागर वेल, पसरै पण फूलै नही ।
ज्यारा गाढा हेत, विछडै पण भूलै नही ॥

हे नागजी, नागर वेल फैलती तो वहुत है पर फूल नहीं देती । जिनका स्नेह प्रगाढ होता है वे विछुडें भले ही पर एक दूसरे को भूलते नहीं ।

नीसासो भल सिरजियो, श्राघो दु ख हरत ।
तुझ विन हियडो वापडो, रो रो फूट मरत ॥

विघाता ने नि श्वास का सृजन भी श्रच्छा ही किया जो श्राघा दु ख हर लेता है । तुम्हारे विना हे निश्वास, हृदय वेचारा फूट फूट कर रो रो प्राण गंवा देता ।

एक पखीरणी अग, प्रीत कीया पछतावजे ।
दीपक देख पतग, जळ वळ राख हुवै जसा।।

एकागी प्रम करने से सबको पछताना पडता है । निर्मोही दीपक की ओर देखो, अनेक पतंग इसके प्रेम मे जलकर राख हो गए ।

ओस पडी धर ऊपरा, भेद न जाण्यो कोय ।
विरहरण को दूख देख कै, रैरण गई है रोय ।।

धरती पर ओस के पडने का भेद कोई न जान पाया । किसी विरहिनी के दु ख की सहानुभूति मे रात्रि रोकर आसू बिखेर गई है ।

थळ भूरा वन भंखरा, नही स चापों जाय ।
गुरणै सुगन्धी मारवी, महकी सह वरणराय।।

वहा की भूमि वालू रेत वाली है और वनों में भाड भखाड हैं, अत चम्पा, केतकी जैसे सुगधित पुष्पो का उत्पन्न होना कठिन है । यह तो मारवणी के सौन्दर्य की गन्ध के कारण ही समस्त वनराजि महक उठी है ।

खडग धार पर काह, चालै तो चलबो सहल ।
मुसकल जग रै माह, नेह निभाणो नागजी ।।

तलवार की धार पर चलना तो सरल है, पर हे नागजी, मंसार में प्रम निभाना वडा कठिन है ।

नागा नागर वेल, पसरै पण फूलै नही ।
ज्यारा गाढा हेत, विछडै पण भूलै नही ।।

हे नागजी, नागर वेल फैलती तो वहुत है पर फूल नही देती । जिनका स्नेह प्रगाढ होता है वे विछुडें भले ही पर एक दूसरे को भूलते नही ।

नीसासो भल सिरजियो, ग्राधो दु ख हरत ।
तुझ बिन हियडो बापडो, रो रो फूट मरत ।।

विधाता ने नि श्वास का सृजन भी ग्रच्छा ही किया जो ग्राधा दु ख हर लेता है । तुम्हारे विना हे निश्वास, हृदय वेचारा फूट फूट कर रो रो प्राण गवा देता ।

एक पखीरणी अग, प्रीत कीया पछतावजै ।
दीपक देख पतग, जळ वळ राख हुवै जसा।।

एकागी प्रम करने से सबको पछताना पडता है । निर्मोही दीपक की ओर देखो, अनेक पतंग इसके प्रेम मे जलकर राख हो गए ।

ओस पडी घर ऊपरां, भेद न जाण्यो कोय ।
विरहण को दूख देख कै, रैण गई है रोय ।।

धरती पर ओस के पडने का भेद कोई न जान पाया । किसी विरहिनी के दु ख की सहानुभूति में रात्रि रोकर आसू बिखेर गई है ।

थळ भूरा वन झखरा, नही स चापों जाय ।
गुणॅ सुगन्धी मारवी, महकी सह वणराय।।

यहा की भूमि वालू रेत वाली है और वनो में झाड झखाड है, अत चम्पा, केतकी जैसे सुगधित पुष्पो का उत्पन्न होना कठिन है । यह तो मारवणी के सौन्दर्य की गन्ध के कारण ही समस्त वनराजि महक उठी है ।

जोबन जातां छै गया, तीनू गया अलग्ग ।
तुरी चढण, मुगधा रमण, वढ वढ वाहण खग्ग ।।

यौवन के जाते ही शास्त्रवर्णित छओ गुण तो चले ही गए तथा ये तीन वस्तुयें और चली गयी, तेज घोडो की सवारी, मुग्धा नायिका के साथ संभोग और उत्साहित होकर खड्ग से प्रहार करना ।

मारू देस उपन्निया, त्याका दंत सुसेत ।
कूंझ बचा गोरंगिया, खंजन जेहा नेत ।।

मरुदेश में उत्पन्न होने वाली क्रौञ्च शावकों की भांति गौरांगिनी सकुमारियो के दांत उज्ज्वल और नेत्र खंजन पक्षी के से होते हैं ।

कद था नाग विसासिया, नैण दिया म्रिग झल्ल ।
कद था सरवर गया, हसा सीखण हल्ल ।।

तुमने पीठ पर लहराते हुए नागों को कब से विश्वास में लिया ? मृगों ने अपने नेत्र तुम्हे कब दिये ? हस गति सीखने के लिए तुम सरोवर कब गई ?

उर चौडी, कड पातळी, झीणी पासळियाह ।
कै तो हर तूटां मिलै, (कै) हेमाळै गळियाह ।।

चौडे वक्षस्थल, पतली कमर और पतली पसलियो वाली सुकुमार सुन्दरी या तो शिव के प्रसन्न होने पर मिलती हैं या हिमालय की बर्फीली कन्दराओ में तपस्या करने पर ही ।

भवरा पूछू वातडी, काळो कवण गुणेण ।
वाहर दाझू लूह झळ, अभ्यतर विरहेण ।।

भंवरे, एक वात पूछू, तुम इतने काले क्यो हो ? भवरा कहता है, बाहर तो ग्रीष्म की लू से जलने के कारण और अन्दर विरहजन्य जलन से काला पड गया हूँ।

ताळा सजड जडयाह, कूंची ले काने थयो ।
खुलसी तो आयाह,(नी तो) जडिया रहसी जेठवा।।

मेरे हृदय कपाट पर मजबूत ताला लगा, उसकी चावी ले तू चला गया है । तेरे आने पर ही यह ताला खुलेगा । अन्यथा यह ताला वद ही रहेगा, जेठवा ।

जिण विन घडी न जाय, जमवारो किम जावसी
विलखतडी वीहाय, जोगण करगो जेठवा

जिसके विना एक घडी भी नही रहा जाता, हाय, उसके विना यह जीवन कैसे वीतेगा ? तुम्हारे विना मैं विलख रही हूं । जेठवा, तू मुझे जोगिन बनाकर चला गया ।

चकवा सारस वाण, नारी नेह तीनूं निरख ।
जीणो मुसकल जाण, जोडी विछडचा जेठवा ।।

चकवा और सारस पक्षियो का तथा नारी का प्रेम तो देखो । इन तीनो ही की आदत एक सी होती हैं । जब इनकी जोडी विछुड जाती है तो इनके लिए जीना कठिन हो जाता है, जेठवा ।

तावड तडतडताह, थळ साम्हा चढता थका ।
लाधो लडथडताह, जाडी छाया जेठवा ।।

धूप तेज पढ रही है, रेतीले टीवे पर चढ रही हूँ । पाव लडखडा रहे हैं । ऐसे विषम समय मे, जेठवा, तू ही मेरे जीवन की सघन छाया है ।

वे दीसे असवार, घुडला री घूमर किया ।
अबला रो आधार, जको न दीसै जेठवा ।।

ऊजली वचन देकर गए हुए जेठवा की प्रतीक्षा कर रही है । मार्ग पर आते हुए घोडे दिखाई दिए । आनन्द से उछल पडी, जेठवा आ रहा है । समीप आने पर देखा कोई और ही पथिक है । ऊजली रो पडी, मुझ अबला का अवलम्ब जेठवा दिखाई नहीं दे रहा है ।

वीणा जन्तर तार, वजाया वी राग रा ।
गुण ने रोऊ गवार, जात न रोवू जेठवा ।।

मेरी मन वीणा को झकृत कर प्रेम के स्वर तूने निकाले थे । मैं तो उन्हीं गुणों पर मोहित हू । मूर्ख, मैं कोई जाति पाति को थोडे ही रोती हूँ ।

जिण सो लाग्यो जोय, मन सोही प्यारो मना ।
कारण ओर न कोय, जात पात रो जेठवा ।।

जिससे जिसका मन लग गया उसके लिए वही अत्यन्त प्रिय है । हे जेठवा, प्रेम म जाति पाति का कोई कारण नही होता ।

टोळी सू टळताह, हिरणा मन माठा हुवै ।
वाल्हा वीछडताह, जीवै किण विध जेठवा ।।

अपनी टोली से विछुड जाने पर तो हरिन का मन भी खिन्न हो जाता है, फिर हे प्रियतम जेठवा, तुम्हारे विछुड जाने पर मैं कैसे जीऊ ।

ऊजली और जेठवा का प्रेमाख्यान राजस्थान और गुजरात मे बहुत प्रसिद्ध है । प्रस्तुत सोरठे ऊजली की विरहावस्था है ।

जिण साचै सोरठ घडी, घडियो राव खगार
वो साचो तो गळ गयो, लद ही गयो लुहार

जिस साचे में सोरठ जैसी स्त्री और रात खगार जैसा पुरुष गढा गया, वह साचा ही गल गया । उस सांचे का बनाने वाला लोहार भी नहीं रहा । ऐसे स्त्री और पुरुष पैदा ही नही हुए ।

सुण बीझा सोरठ कहे, नेह केता मण होय
लाग्या रो लेखो नही, टूटा टाक न होय

सोरठ पूछती है, वीझा, नेह का यदि तोल किया जाय तो वह कितने मन होगा। वीझा उत्तर देता है, जुडे हुए प्रेम का कोई हिसाब ही नही, मगर प्रेम टूट गया तो एक रत्ती भर भी नही।

सोरठ थूं छै बहुगुणी, पण इक थोक विणास
ज्या सुगणी रे मन वसी, (त्याह) लोही चढे न मास

सोरठ, तुझमे अनेक गुण हैं पर एक बडा भारी अवगुण भी है। जिस चतुर पुरुष के मन मे तुम बस गई हो उसके शरीर पर रक्त और मास चढ़ता ही नही। तुम्हारे विरह मे वह सूखता रहता है।

सोरठ नागण हो रही, ज्यूं छेडे ज्यूं खाय
आयो वीझो गारूडी, लेग्यो कठ-लगाय

यौवनोन्तमत्त सोरठ नागिन हो रही है। जो छेडता है उसे काट लेती है। वींझा रूपी गारुडी आया और सोरठ को अपने कण्ठ से लगा कर ले गया।

सोरठ था मे गुण घणा, रतियन ओगण होय ।
गूंदगरी रा पेड ज्यूं, कदियन खारो होय ।।

सोरठ, तू अनेक गुणो से परिपूर्ण है, रत्ती भर भी अवगुण तुझ में नही । जैसे ईख मे मिठास ही मिठास है कही से भी तो कड़ुआ नही ।

वीझा म्हारे आगणा, नित आवो नित जाय
घट री वेदन वालमा, कहता कही न जाय

वीझा, तुम प्रतिदिन मेरे यहा आते हो और चले जाते हो । प्रियतम, हृदय की वेदना, मैं तुमसे कहना चाहती हूँ पर कही नही जाती ।

सोरठ तूं सुरनार, सिर सोने रो बेहडो
पग थाभो पणिहार, वाता बूझे वीझरो

सोरठ, तुम सिर पर सोने का कलश रखे सुरबाला सी लग रही हो । पनिहारिन, थोडी रुको तो सही, वीझा तुमसे दो बात करले ।

वीझा बीण वजाय के, गायो सोरठ राग
झोला खावे नाग जू , जागी सोरठ जाग

वीझा ने वीणा वजाकर सोरठ राग गाया । सोरठ की नींद टूट गई । वह वीणा के स्वर पर काले नाग की भाति झूमने लगी ।

सोरठ साकर री डळी, मुख मेल्या घुळ जाय ।
हिवडै आय विलूंवता, हेमाळो ढुळ जाय ।।

सोरठ मिश्री की डली जैसी मधुर है, मुख मे रखते ही जिसका मिठास घुल जाता है । जब वह आकर हृदय से लग जाती है तो हिमालय की सी शीतलता तन मन में व्याप्त हो जाती है ।

सोरठ सोना रो टको, पर हत्थ लो परखाय
खोटा कळजुग वापरया,(राणी)मत पीतळ व्हे जाय

सोरठ स्वर्ण की भाति विशुद्ध है, चाहे कसौटी पर कस कर देख लो । बुरा कलयुग आया है । रानी, कहीं तुम पीतल मत हो जाना, बदल मत जाना ।

सोरठ रग री सावळो, सुपारी रे रग।
लू गां जैडो चरपरी, उड उड लागै अग ॥

सोरठ का रग सुपारी सा सावला है। लौंग की भाति वह चरपरी है। उसकी देह गन्ध उड उड शरीर को उद्वेलित कर देती है।

सोरठ उतरी महल सू, झाझर रे झणकार
घूज्या गढ रा कागरा, गाजी गढ गिरनार

सोरठ शृगार कर छम छम करती महलो से नीचे उतरी तो उसके पायल के झकार से गढ़ के कगूरे कापने लगे, गिरनार पर्वत गूज उठा।

सोरठ थाने ओळख्या, झाझा झूलर माय
जाणक चमकी बीजळी, काळा बादळ माय

बीझा कहता है, सोरठ, मैंने तुम्हे बहुत सी स्त्रियो के समूह में भी झट पहचान लिया। तुम ऐसी लग रही थी जैसे काले बादलो मे बिजली चमक रही है।

ऊंचो गढ गिरनार, आबू पै छाया पडै।
सोरठ रो सिणगार वादळ सू वाता करै॥

गिरनार पहाड पर वना गढ इतना ऊंचा है कि उसकी छाया आबू पर पडती है। गिरनार गढ पर वैठी सोरठ का शृगार तो बादलो से वातें करता, लगता है।

सोरठ और वींझा का प्रेमाख्यान राजस्थान और गुजरात में बहुत प्रसिद्ध है।

तीस वरस कुसती करी, पड गुड उथल्ल पुथल्ल
थै दीधो गोडा तळै, अई हो मीत अमल्ल

तीस वर्ष तक तो किसी तरह अफीम के साथ कुश्ती करता रहा, तन्दुरुस्ती को खीच तान कर सम्भालता रहा। आखिर इस व्यसन ने मुझे अपने घुटनो के नीचे दवा ही लिया। मैं इसके अधीन हो गया। मेरा स्वास्थ्य नष्ट हो गया।

हाथ जळै अंगळी जळै, जळै बत्तीसू दन्त।
कर जोडया कामण कहे, छोड तमाखू कन्त॥

तमाखू पीने से हाथ जलते हैं, अंगुलिया जलती हैं और दात जलते हैं। हाथ जोडकर कामिनी अरज करती है, कन्त, तमाखू पीना छोड दो।

हे कन्था मत थूं करै, हाय तमाखू हेत।
टका एक रो टाट मे, दिन ऊगाई देत॥

हे कंत, इस तमाखू से प्यार मत करो। हाय, छोड़ो उसे। सवेरे ही सवेरे रोजाना एक टके की टाट में लग जाती है। रोजाना टका खर्च करना होता है।

प्याला दो पीधा पछे, लाव लाव कर लाह
वाता पी अन्ड बन्ड वके, वाह दुवारा वाह

पीने वाला, दो प्याले पीते ही 'ला ला और ला' कहकर और शराब मांगने लगता है। पीकर अन्ट शन्ट बकने लगता है। दुवारा तुम्हारी लीला विचित्र है।

करज कलाळी को कढै, तिण सू होत तबाह।
चोरी कर दारू चखै, वाह दुवारा वाह॥

कलाल का कर्ज सिर पर बढ़ता रहता है। उससे घर तबाह हो जाता है। चोरी करके भी पीने वाला शराब पीता है। इस शराब को क्या कहा जाये।

घर ओढण नह गूदडो, फाकण नह फूल्याह
तो पण प्यालो ना तजै, वाह दुबारा वाह

घर में ओढने को गूदडी तक नही है, चाबने को चने नसीब नही होते, फिर भी व्यसनी इस व्यसन मे पड कर प्याले को दूर नहीं फेंकता। वारूणी, तुम्हारी माया धन्य है।

आम फळै परवार सू, पै महुडो पत खोय
ज्यारो पाणी जो पीवै, अकल कठा सू होय

आम का पेड फलता है तो परिवार के साथ, नव पल्लव के साथ फलता है। पर महुआ का पेड अपनी सारी समृद्धि को खोकर फलता है, उसकी पत्तिया भी झड जाती हैं। प्रतिष्ठा से हीन होकर फलने वाले ऐसे वृक्ष के फूलों का रस, मदिरा पान करने वालो से समझदारी की आशा कैसे की जा सकती है?

इसकी नर घण आदरे, जिसकी कहू न झूठ।
चाळै लग चुसकी चखै, विसकी विस को घूंट॥

इमें बिल्कुल झूठ नही, मदिरा को केवल व्यसनी पुरुष ही आदर देते हैं। वे यह नही समझते कि वे व्हिसकी की चुस्किया नही ले रहे हैं, विष की घूटें पी रहे हैं।

दिल्ली दोखो लागियो, रडो, दारू राग ।
तिण कारण सू तुरकडा, खेंच न सकिया खाग।।

दिल्ली की बादशाहत भी शराब की वजह से मुगलो के हाथ मे चली गई । वेश्याओ, मदिरा सेवन और आमोद प्रमोद मे फस जाने मे वे अपनी तलवारें खीचने योग्य नही रहे ।

पोसीदा मद पक, पी पी वार पधारवो
दुनिया आख्या देख, पीधोडा जाणै परा

आप तो बडी चतुराई से चुपचाप पँग चढाकर बाहर पधारते हैं । ार दुनिया से आप छिपा नही सकते । आपकी आखें देखकर ही लोग जान जाते हैं, आप पीकर पधारे हैं ।

छानै ले ले छाक, बप रे क्यूं बासे पड्या ।
अब पीणो एराक, त्यागो काबू चित्त रख ।।

छिप छिप कर मदिरा पीकर क्यो अपने स्वास्थ्य के पीछे हाथ धोकर पड़े हो । अब मदिरा पान करना छोड दो, अपने मन पर काबू रखो ।

जिदगानी सू जाय आसव थो अधकाळिया
मेल्यो की इण माय, पीणो मद छोडो परो

मदिरा पान करने वाले अपना जीवन नष्ट कर लेते हैं, अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। शराब पीने मे कुछ नही रखा है। इसे छोड दो।

हेम कळस कुच जुग हिये, नीर कळस सिर लेय।
पणघट हूता वाहुडै, कळस दुहू कर देय॥

जिनके हृदय पर कुच रूपी दो कलश शोभित है और सिर पर जल का कलश है। कुच कलश और नीर कलश दोनो को हाथो से सम्भाले हुए पनघट से लौट रही हैं।

नवा सुरंगा ओढिया, चगा भीणां चीर
भर ही हेम वरन्निया, दूध वरन्ना नीर

सुन्दर, भीने और सुरगे चीर ओढ कर सोने के से रग वाली सुन्दरिया, दूध जैसा पानी भर रही है।

लावै सर पाणी भरै, गोरी गात श्रनूप।
ज्या श्रागै पाणी भरै, रग श्रलौकिक रूप ॥

सुन्दर, श्रनुपम, रूपसी वालायें, लावे नाम के सरोवर पर पानी भरती है जब श्रलौकिक रूपवती रम्भा का रूप भी इनके श्रागे पानी भरने लगता है।

घूंघट खोलदी नही, वोलदी पिक वैण
गज गत जावै गौरिया, लावै सर जळ लैण

घूघट तो उठाती नही, कोयल सी वोलती हुई, गजगति से गौराङ्गिया 'लावे' नामक सरोवर पानी भरने जाती है।

श्राखडिया श्रणियाळिया, काजळ रेख कियाह
बीभळिया भावदिया, लाज सनेह लियाह

श्रनियाली श्रांखो में काजल की रेखा शोभित है। लज्जा श्रौर स्नेह भरी श्रांखो वाली ललनायें, विह्वल पुरुषो को वडी प्यारी लगती है।

अग अग मद ऊफरणै, जोवन आठो जाम।
त्या हदी तसवीर रो, कलम हुवै नह काम।।

जिनके अ ग प्रत्यग से आठो पहर मादक यौवन उफनता रहता है। उस उफनते मादक यौवन का चित्र तो तूलिका खैंच ही नही सकती।

•

दात 'दमकै अहर दुत, जाण चमके बीज
ज्या री धुन मधुरी सुणै, रहे तपोघन रीझ

दिन की काति में भी इनके दात विजली की तरह दमकते हैं। उनकी मधुर वाणी सुनकर तो वीतरागी तपस्वी भी मोहित हो जाते हैं।

कोमल राता पातळा, अधर जिका रा ईख
अभिलाखै पीवण अमर, सुधा जाम दे सीख

इनके सुकोमल, लाल लाल, पतले मधुरिमा से भरे अधर हैं। इन्हें देखकर तो देवगण भी अमृत के प्याले को दूर हटा, इन अधरो के पान की अभिलाषा करने लगते हैं।

लागा कुसुम सरीस वप, ज्यारा पडै खरोट
हद नाजक हिरणक्खिया, है माझल हमरोट

सिरीस के पुष्प की लग जाने से भी जिनके कोमल शरीर पर खरोच पड जाती है। ऐसी असीम सुकुमारी हिरणाक्षिया, हमरोट में निवास करती है।

चीतरा लको गोरिया, सोढा भंवर सुजांण
वड भुके लबा तणां, अड्यो गढ अमरांण

अमराणे का (अमरकोट) प्रदेश भी खूब है। वहा चीता की सी कमर वाली गोरिया होती हैं और सोढो जैसे भंवर, रसिक मिजाज पुरुष। भुके हुए, लम्बे तनो के वड के पेड अमराणे में छाये रहते है।

रोट भटुके तिण रजी, पेह घुंधळा पहाड।
राणे घर भु जाई रची, मारू धन मेवाड।।

धन्य है मेवाड के मनुष्य ! राणा के घर गोठ होती है। रोटियो के झटकने से जो खेह उडती है उससे वहा के पहाड घुंधले दिखलाई देने लगते हैं।

धन परबत धर थभणा, मणा नै रतना धाम।
सीहां सिद्धा सोहडा, वीर विसा विसराम ।।

हे धरा के स्तम्भ, मणियो और रतनो के धाम, सिहो, सिद्ध पुरुषो और वीर योद्धाओ के विश्राम स्थल अरावलि गिरिमाला, तू धन्य है।

भाठा तू सोभागियो, पीछोळा री टग्ग।
सुकुमारी पाणी भरै, ऊपर दे दे पग्ग ।।

पीछोला के किनारे पर लगे हुए हे पत्थर, तू वास्तव में सौभाग्य-शाली है। तुम पर पैर रख रख कर सुकुमारिया पानी भरती रहती हैं।

गिर ऊचा ऊचा गढा, ऊचा जस अप्रमाण।
माझी धर मेवाड़ रा, नर खट्टरा निरखाण ।।

जहा ऊचे ऊचे पहाड हैं और गढ भी ऊचे ऊचे हैं। जहा यशस्वी योद्धाओ का यश अपरिमेय है। ऐसी मेवाड भूमि के नायक कद मे ओछे भले ही हो पर उनके काम बडे ऊचे हैं।

माझी भड मेवाड रा, झड पडिया जी तोड।
अकबर औरग ओझक्या, ऊ यो ही त्रित्तोड ॥

मेवाड के वीर सेनानी जिसके लिए जी तोडकर लड मरे तथा अकवर और औरगजेब जिसके डर से चौंक चौंक कर उठते थे, यह वही चित्तौड है।

अलादीन अकबर तणी, मिटगी सरव मरोड।
कीरथभ कथना कथै, ऊ यो ही चित्तौड ॥

अल्लाऊद्दीन और अकबर का समूचा गर्व जहा खण्डित हो गया और कीर्ति स्तम्भ जिसकी कथा का बखान कर रहा है। यह वही चित्तौडगढ़ है।

चू डा, सगता, मकवरणा, चहुवाणा राठौड।
सूरा रगता सीचियो, ऊ यो ही चित्तौड ॥

चू डावत, सगतावत, झाला, चौहान और राठौड राजपूतो की खापो के शूरवीरो के रक्त से जो सीचा गया है यह वही चित्तौडगढ

उदियापुर हंजा वसै, माणस घण मोलाह।
दे झोला पाणी भरै, रग रे पीछोलाह ।।

उदयपुर में सुन्दर स्त्रिया और सज्जन पुरुष वसते हैं। यह पीछोला तालाब भी कितना भाग्यवान है जिस पर ऐसी सुन्दरिया पानी भरने आती हैं।

उदियापुर री कामणी, गोखा काढै गात।
मन तो देवा रा डिगै, मिनखा कितीक बात ।।

उदयपुर नगर के झरोखो मे बैठी कामनियो की झलक दिखलाई दे जाती है तो देवताओ का भी मन डिग जाता है। पुरुषो की तो बात ही क्या ?

गढ दिल्ली, गढ आगरो, ओ गढ बीकानेर।
भली चुणाई भाटिया, सिरे ज जैसलमेर ।।

दिल्ली का गढ, आगरे का गढ और बीकानेर के गढ़ विख्यात हैं। भाटियो, तुमने जैसलमेर का गढ भला चुनाया जो इन सब से बढ़ कर है।

घोडा होइ ज काठ रा, पिडळी होइ पखाण ।
लोह तणा होइ लूगडा, जोईजे जेसाण ।।

यदि काठ के घोडे हो, पत्थर की पिण्डलिया हो और लोह
कपडे हो तो जैसलमेर देखने का साहस करना चाहिये क्योकि साधा
तया वहा की यात्रा के कष्ट सहन नही किये जा सकते ।

मारवाड रै देस मे, एक न भाजे रिड्ड ।
ऊचाळो कै अवरसणो, कै फाको कै तिड्ड ।।

मारवाड के देश में एक भी रूढि नही तोडी जाती । या तो अ
के कारण लोग देश छोड कर चले जाते हैं या अनावृष्टि होती है
कुछ खेती हो भी गई तो टिड्डिदल नष्ट कर देता है ।

जिण भु य पन्नग पीवणा,केर कटाळा रूख ।
आके फोगे छाहडी, हूछा भागई भूख ।।

-जिस भूमि मे सोते समय डस जाने वाले सर्प हैं, काँटेदार "कै
जैसे जहाँ वृक्ष हैं, आक और "फोग" की ही जहाँ छाया है और घ
बीजो की बनी रोटी ही जहाँ भूख मिटाने के लिये मिलती है ।

जळ ऊंडा थळ ऊजळा, नारी नवलै वेस ।
पुरख पटाधर नीपजै, अै हो मुरधर देस ।।

खूब गहरा पानी, उज्ज्वल भूमि, सुन्दर वस्त्र पहिने हुए स्त्रिया और वीर पुरुष जहा उत्पन्न होते हैं ऐसा मरुधर देश है ।

बाळू बाबा देसडो, ज्या पाणी कूवाह ।
आधी रात कुहक्कडा, ज्यू माणस मूवाह ।।

हे बाबा, वह देश जला देने योग्य है जहा पानी के लिये लोग आधी रात को कुए में मुह देकर यो चिल्लाते हैं जैसे कोई मनुष्य मर गया हो ।

बाळूं बाबा देसडो, जह डूगर नह कोय ।
तिण चढ मूकू धाहडी, हिवडो उरळो होय ।।

हे बाबा, वह देश जला देने योग्य है जहा कोई पर्वत न हो, जिस पर चढ कर दुखातिरेक में तीव्र स्वर से चिल्लाऊ ताकि हृदय हलका हो जाये ।

जोधाणो जसराज रो, खूवी करे खलक्क।
खावण पीवण गाठ रो, देखण री हलक्क ॥

यह जसवतसिहजी का जोधपुर है, जहा चारो ओर शान शौकत है। खाने पीने के लिये तो गाठ का खर्च करो। सिर्फ देखने देखने की मौज है जो आख से देख लो।

मारू थारा देस रो, काई करा वखांण।
ऊचा टीवा रेत रा, वाजरिया रो खांण ॥

प्रिय, तुम्हारे देश की क्या प्रशसा करू । यहां ऊचे ऊचे रेत के टावे हैं और खाने को वाजरी।

मारू थारा देस मे, निपजे तीन रतन्न।
एक ढोलो दूजी मारवण, तीजो कसूमल व्रन्न॥

प्रिय, तुम्हारे देश, राजस्थान में तीन रत्न पैदा होते हैं, एक प्रेमी, दूसरी प्रेमिका और तीसरा कसूमल रग। जो वीरता का सूचक है, अर्थात् तुम्हारा देश प्रेम और पराक्रम का स्थल है।

देस सुरगो जळ सजळ, मानस मिठबोलाह।
घर घर चन्द वदन्नियाँह, नीर चढै कमळाँह।।

सुन्दर मालव देश में जल की बहुलता है और मनुष्य मिष्टभाषी हैं। घर घर में चन्द्रवदनी स्त्रियां हैं जिनके कमल मुखो पर पूर्ण कान्ति है।

खग धाराँ थोड़ाँ नराँ, सिमट भर्‌यो सह पाण।
इण थी मुरधर तरळ जळ, पाताळाँ परवाँण।।

मरुधर में तरल पानी पाताल मे बहुत नीचे मिलता है। ऊपर का पानी सिमट कर तलवार की धार और वीर पुरुषो में समा गया है।

मोठ मतीरा बाजरी, खावण ने भुरट्ट।
पसवाडा पळका करे, अई ओ घर थळवट्ट।।

खान को तो थली प्रदेश में मोठ, मतीरे, बाजरी और भुरट्ट (कांटो वाली घास) है। पर यहाँ के निवासियो के शरीर पर नूर चमकता रहता है। धन्य है यह बीकानेर का थली प्रदेश।

मोठ मतीरा वाजरी, काचर खेलर खाण ।
धन मे घाडा नीपजे, वरसाळे वीकाण ।।

वीकानेर में मोठ, मतीरे, वाजरी, काचरी, खेलरी खूब ही पैदा होती है । यदि वर्षा अच्छी हो जाय तो अनाप शनाप पैदावार होती है।

अरटा, घाटा, अमल्ला, मोरा कळहळ मन्द ।
मरद रहे मदछकिया, आवू देस अवल्ल ।।

आवू देश की मनोहरता क्या कहना ? कुवो पर रेंहट चला करते हैं । पहाडी घाटियो वाले प्रदेश में मोरो का मन्द-मन्द स्वर गू जता रहता है । यहा के मर्द अफीम के मद मे छके रहते हैं ।

आडावळा अवखी धरा, नीचा अरट नेवाण ।
सकें फोजा साह री, अई हो घर गोढाण ।।

अरावली पर्वत माला दुर्गम स्थल है । नीचे नीचे पानी वाले गहरे कुंवो पर रेंहट चलते रहते हैं । इस गोढवाड प्रदेश की धरती मे दुर्गमता के कारण बादशाह की फौज भी आने मे झिझकती है ।

टूकै टूकै केतकी, झिरणै झिरणै जाय ।
अरबुद की छबि देखता, और न आवै दाय ।।

प्रत्येक शिखर केतकी के पुष्पो से लदा हुआ है, और झरने झरने पर पुष्प खिल रहे हैं। ऐसे अर्बुद पर्वत की शोभा को देखने पर और कुछ अच्छा ही नही लगता ।

बाग, बगीचा, बावडी, फूलवादा चौफेर ।
मौज सुरगी माळिये, येह बाता आवेर ।।

आवेर की धरती में बाग, बगीचे, बावडिया बहुत हैं। चारो ओर फुलवाडिया लगी है । सुन्दर मकानो मे यहा के निवासी आनन्द करते हैं ।

बागा बागा बावड्या, फुलवादा चहु फेर ।
कोयल करै टहूकडा, एहो घर आवेर ।।

जहा बाग-बाग में बावडिया हैं, चारो ओर रग विरगे फूल हैं और कोयल का कूजन है, ऐसी सुन्दर आवेर की भूमि है ।

ऊ आवा ऊ आमली, रोयण दाडम दाख।
रोयण आवे रस घणो, अइयो धर गुजरात ॥

गुजरात में आम हैं, इमलिया है। जगल मे भी रस भरे आमो के पेड है, अनार और दाखें लगी हुई है। ऐसा सम्पन्न सुन्दर गुजरात देश है।

केकाणो काबुल भली, पोहर भलो परभात।
मरदा भली मुरधरा, गोरडिया गुजरात ॥

घोडे तो काबुल के अच्छे होते हैं। समय प्रभात का सुन्दर होता है। स्त्रिया गुजरात की भली होती है और मर्द मरूघरा के अच्छे होते हैं।

बाळू बाबा देसडो, ज्या पाणी सेवार।
ना पणिहारी भूलरो, ना कूवै लैंकार ॥

हे बाबा वह देश जला देने योग्य है जहा पानी पर सेवार छाई रहती है। न पनिहारियो की टोली दिखाई देती है और न कूवो पर जल निकालने वालो की राग सुनाई पडती है।

बाळू बाबा देसडो, ज्या फीकरिया लोग ।
एक न दीसै गोरडी, घर-घर दीसै सोग ।।

हे बाबा, वह देश जला देने योग्य है जहा लोग चिन्तित रहते हैं। एक भी सुन्दरी दिखाई नही देती और घर-घर मे शोक सा छाया रहता है ।

साळ बखाणो सिंघ री, मूंग मडोवर देस ।
भीणा कपडा माळवे, मारू मुरधर देस ।।

चावल सिंघ प्रदेश के अच्छे होते हैं। मूंग मडोवर के और महीन वस्त्र मालवे में अच्छे होते हैं। पुरुष तो मरुधर देश के अच्छे हैं ही ।

ना कोई देवळ पूतळी, ना कोई रावळ रज्ज ।
हेरया हेरया लाधसी, सहर उज्जोणी मज्झ ।।

न तो किसी मन्दिर में ऐसी सुन्दर मूर्ति देखने मे आई और न राजाओं के रनवास में ही हैं। ऐसी सुन्दरी उज्जैन में बहुत ढूंढने से मिल सकती हैं।

गंगा मच्छ गधाह, कुण जाई व्याही कठै।
(जारे)धुर कुळ ए धधाह,(वारे)सरम कठा सू सांवरा ।।

कौरवो और पाडवो के सामने द्रौपदी का चीर खैंचा जा रहा था। भरी सभा में इस प्रकार राजमहिषी को अपमानित और लाछित किया जा रहा था पर विवेक और विक्रम के ये सभी ठेकेदार मुह लटकाये चुपचाप बैठे रहे। द्रौपदी का नारी हृदय तडप उठा और वह रोषभरी कहती है, गगा और मत्स्यगधा कहा तो पैदा हुई और कहां व्याही गई। -इन कुलीनो के कुल का यही धधा है। हे, घनश्याम इन वर्णसकरो को लज्जा कैसे महसूस हो ?

जे सासू जणतीह, सुसरा रो हेकज सुतन।
तो मूछाँ तणतीह, चीर न तणतो सांवरा।।

यदि मेरी सास ने मेरे श्वसुर से एक भी पुत्र को जन्म दिया होता तो हे कृष्ण, आज मेरा चीर नही खैंचा जाता बल्कि मूछें तनती और ये शत्रु को ललकारते।

कल्लो परघै आपरी, सीख दिये सारांह।
वधै न ऊमर कायरां, घटै न भू भारांह।।

कल्ला, अपनी सारी सभा और मित्र मडली को यह सीख देता है, कायरो की आयु बढती नही है और वीरो की घटती नही।

धन जोवन अर ठाकरी, ताँ ऊपर अविवेक ।
ये चारू भेळा हुवै, अनरथ करे अनेक ।।

सम्पदा, प्रभुत्व और यौवन यो ही उपद्रव कारी है, यदि अविवेक भी इनके साथ हो तो अनेक अनर्थ हो जाते हैं ।

हीमत कीमत होय, बिन हीमत कीमत नही ।
करै न आदर कोय, रद्द कागद ज्यूं राजिया ।।

मनुष्य का मोल उसके साहस से हैं । जिसमे साहस नही उसकी कोई कीमत नहीं । हे राजिया, साहस के बिना आदमी रद्दी कागज के समान है, उसका कोई आदर नहीं करता ।

सुध हीणाँ सिरदार, मत हीणाँ राखे मिनख ।
अस आधा असवार, राम रूखाळो राजिया ।।

बुद्धिहीन सरदार अपने पास मतिहीन पुरुषो को रखते हैं । जहा घोड़ा और सवार दोनो अ घे हो, वहा ईश्वर ही मालिक है ।

पाटा पीड उपाव, तन लागाँ तरवारिया ।
वहै जीभ रा घाव, रतो न ओखद राजिया ।।

शस्त्रो से लगे घावो को भरने की तो अनेक औषधिया और उपचार है, पर तीखो वचनो द्वारा किये जख्मो की कोई औषधि नही ।

लछमी कर हरि लार, हर ने दघ दीधो जहर ।
आडवर अधिकार, राखै सारा राजिया ।।

समुद्र मथन मे प्राप्त पदार्थों को बाटा गया तो विष्णु को तो उनकी शान शौकत देख लक्ष्मी दी गई । स्मशान वासी भोलानाथ को जहर दिया गया । हे राजिया, वैभव को सभी प्यार करते हैं ।

घोचो लाग्याँ घाव, घी गेहू भावै घणाँ ।
अहडा तो उमराव, रोट्याँ मू घा राजिया ।।

थोडी सी चोट, काटा लग जाने पर भी जो आराम करना चाहें । ऐसे सरदार उमराव, वेतन लिये बिना ही सेवा करना चाहें तो भी महगे पडते हैं ।

फिट कानूनां फांस, साद प्रजा रो सीवियो।
सो घुंधवायो सांस, ज्वाळा मुख जूं जाणजे ।।

अन्यायपूर्ण कानून बना कर जनता के कंठो को सी दिया है, उसकी आवाज को रोकदी है। जनता का दम घुट रहा है, इसे ज्वालामुखी समझना, इसका विस्फोट क्रान्ति की आग उगलेगा।

परजा ही पलटाविया, अण चित्या विण फौज।
काल जिका धर गजता, आज मिलै नह खोज ।।

बड़ी-बड़ी सल्तनतों को प्रजा ने सेना के बिना ही पलट डाला। कल तक जो शक्तिशाली सत्तायें पृथ्वी पर शासन कर रही थी, उनका आज नामो निशान भी नही हैं।

समै पलटतां जेज नह, जठै प्रजा झुंझळाय।
धर धूजण की बस चलै, पल मे महल ढहाय ।।

जहा प्रजा झुंझला जाती है वहा समय बदलते देरी नही लगती। भूकंप आने पर किसका वश चलता है। क्षण भर में बड़े-बड़े महल धराशायी हो जाते हैं।

आछा कामाँ ऊवमो, धणियाँ निज धन रास ।
नह तो नैडा आवणा, महल मजूराँ वास ॥

राजाओ, अपनी धनराशि को उत्तम कार्यो मे खर्च करोगे तो तुम्हारे हित मे अच्छा होगा अन्यथा इन महलो मे मजदूरो का निवास समीप समझो ।

हूँतो मोटी आस, सायर झीलेवा तणी ।
हसा भया निरास, वक देस्या जद डोहताँ ॥

हस को वडी आशा और उत्सुकता थी, सरोवर में जाकर स्नान करेंगे । वहा जाकर वगुलो को घूमते देखा तो हस ,, हो गया ।

वे मूनी वक ऊजळा, मी
पूछो सफरी पनग नें, करत

वगुला मुनियो की तरह ध्यान लगाये
ही उज्जवल है । मोर भी वडा मीठा वोलत
इनके कारनामे तो पूछो वे ही वतायेंगे कि ये

ऊजड खेडा फिर वसँ, निरधनियाँ धन होय।
गयो न जोबन वावडे, मुवा न जीवे कोय॥

उजडे हुये गाव फिर से वस जाते हैं, आवाद हो जाते हैं, गई हुई लक्ष्मी भी लौट आती है। पर गया हुआ यौवन फिर से नहीं लौटता और मरा हुआ जिन्दा नही हो सकता।

चिता मे बुध परखिये, टोटे परख त्रियाह।
सगा कुवेळा परखिये, ठाकर गुनो कियाँह॥

चिन्ता मे बुद्धि की, आर्थिक कष्ट में पत्नी की, विपत्ति मे सगे सम्बन्धियो की और गुनाह करने पर गाव के ठाकुर की परीक्षा हो जाती है।

जात वळै नह दीहडा, जिम गिर निरझरणाह।
उठ रे आतम करम कर, सुवै निचतो काह॥

जैसे गिरी माला से वह कर चला गया जल पीछा लौटता नही उसी तरह जो दिन बीत गया पीछा नहीं आ सकता। रे मनुष्य, उठ, काम कर जीवन का लाभ ले। निश्चिन्त हो सो क्या रहा है।

हित कर जोडे हाथ, कामरा सूं ग्रनमी किसो ।
नमिया तिलोकीनाथ, राधा ग्रागळ राजिया ।।

ससार में ऐसा कौन है जो स्त्री के भ्रागे न झुका हो । सभी हाथ जोडते है । त्रिलोकी के नाथ कृष्ण को भी राधा के भ्रागे सिर झुकाना पडा ।

ससनेही समदा परै, वसत हियै मझार ।
कुसनेही घर ग्रागरां, जारा समदा पार ।।

सच्चा स्नेही समुद्र पार रहते हुए भी ऐसा लगता है जैसे हृदय के भीतर हो भ्रौर कुस्नेही घर के भ्रागन में रहते हुए भी समुद्र पार रहता हुम्रा सा दिखाई देता है ।

जारौ हरिया रूखडा, नीरा हन्दो नेह ।
सूका ठूठ न जाराही, की घर बूठा मेह ।।

जल के हृदय का प्रेम हरे वृक्ष ही जान सकते हैं। सूख ठूठो को क्या पता कि किधर वर्षा हुई है ।

साठी चावळ भैंस दूध, घर सिळवती नार ।
चौथी पोठ तुरग री, सुरग निसाणी चार ।।

साठी चावल, भैंस का गाढा दूध, घर में सुशील स्त्री और घोड़े की सवारी, ये चारो ही स्वर्गीय सुख की निशानी हैं ।

दूरा सू कह देत, सोभा घर सपत तणी ।
हिवडा हन्दो हेत, नैणा झलकै नाथिया ।।

परिवार के मेल जोल की शोभा घर दूर से ही कह देता है । हे नाथिया, हृदय का स्नेह आखो मे ही झलक आता है ।

मगर मकोड़ो मूढ नर, तीनूं लाग मरन्त ।
भवर भुजग'र सुघड नर, डस कर दूर रहन्त ।।

मगर, मकोडा और मूर्ख मनुष्य, ये तीनो चिपक कर मर जाते है, जब कि भवरा, सर्प और चतुर मनुष्य वार करके दूर हो जाते हैं ।

आय सुहागण लाकडी, तो सू पडियो काज ।
माता दी आसीसडो, सो दिन आया आज ।।

सुहागिन लकडी, अ , तेरा सहारा लेना पडेगा । माता ने जो दीर्घायु होने की आशीष दी थी वे दिन आगये ।

यो आगण या देहळी, यो ही ससुर को गाव ।
दुलहण दुलहण वाजता, बुढिया पडग्यो नाव ।।

यही आगन यही देहली और यही वह ससुर का गाम है । जहा मैं कभी नव वधू थी । लोग "दुलहिन दुलहिन" कह कर पुकारते थे । आज वही मेरा नाम बुढिया पड गया है ।

कु जर विध विसार, जै चरियो तू मोकळो ।
हिव तू राजदुवार, खड पूळा संतोस कर ।।

हे हाथी, उस विंध्यवन को भुलादे जहा तू खूब चरा है । अब तो तू राजा (?) के घर पर है अत घास फूस खाकर ही संतोष कर ।

माथे आकस पग निगड, रात न आवै नींद ।
वेदण वीभ बिछोहियां, सहे मयमत्त गयंद ।।

मस्तक पर अंकुश के प्रहार होते हैं, पैर लौह शृङ्खला से जकड़ हुये हैं और रात को नींद भी नहीं आती । विन्ध्यवन के वियोग में मदमस्त हाथी इस प्रकार वेदना सह रहा है ।

हाथां परबत तोलता, समदा घूंट भरेह ।
वे जोधा दीसै नहीं, तूं क्यूं गरब करेह ।।

जो योद्धा हाथों पर पर्वत उठाने और समुद्र का आचमन करने में समर्थ थे उनका भी अस्तित्व नहीं रहा, फिर तू क्यों गर्व करता है ?

पान झड़ता देख के, हंसी जो कूंपळियाह ।
मो वीती तो वीतसी, धीरी बापडियाह ।।

पुराने पत्तों को झड़ते हुये देख कर नवजात कोपले हसी । उनकी हंसी देख कर जीर्ण पत्तों ने कहा, ठहर जाओ, यही हाल तुम्हारा भी होगा ।

हुवै मुनी वक ऊजळा, मीठा वोला मोर।
पूछो सफरी पमग नै, करतव वडा कठोर ॥

कहने को तो वगुले मुनियो की तरह उज्ज्वल शरीर वाले और मोर मीठे वोलने वाले होते हैं पर मछली और सर्प से पूछो कि उनके कार्य कितने कठोर होते हैं।

कोयल वोल सुहावणा, वोलै इमरत वैण।
किण कारण काळी भई, किण गुण राता नैण ॥

हे कोयल, तू अमृत के समान मधुर और सुहावने वचन वोलती है पर तुम्हारा शरीर इतना काला और नेत्र इतने लाल क्यो हो गये हैं ?

वागा वागा हू फिरी, कठै न लाध्या सैण।
तडफ तडफ काळी भई, रोय रोय राता नैण ॥

कोयल उत्तर देती है, मैं वागो में ढूंढती फिरी पर मेरा प्रिय कही भी न मिला। उसी के विरह में तडफ-तडफ कर यह शरीर काला हो गया है और रो-रो कर नेत्र लाल हो गये हैं।

आग लगी वन खंड मे, दाझ्या चदरण वस।
हम तो दाझ्या पंख विन, तू क्यूं दाझै हस॥

वन खंड में आग लग गई और चदन के वृक्ष जल गये। चदन कहता है, हम तो इस लिये जल गये कि विना पख वाले थे पर हे हस, तू पखों वाला होकर भी क्यो जला ?

पान मरोड्या, रस पीया, वैठ्या एकरण डाळ।
तुम जळो हम उड़ चलें, जीणो किताक काळ॥

तुम्हारे पत्तो को मरोड कर हमने रस पिया है और साथ-साथ रहे हैं। आज आपत्ति वेला में तुम्हे जलते हुये छोडकर हम उड जाय तो क्या हमें युग-युग तक जीना है ?

और कछू प्यारो नही, ना कछु और अनूप।
सब कुछ प्यारो है ऊदा, अपणो अपणो चूंप॥

न तो कोई वस्तु प्यारी होती है और न अनुपम ही। हे उदयराज, सब को अपनी अपनी पसंद ही प्रिय है।

हाय दई कैसी भई, अणचाहत को संग।
दीपक कै भावे नही, जळ जळ मरै पतंग॥

हाय विधाता, यह न चाहने वालो का साथ क्यों किया! दीपक तो परवाह भी नहीं करता और पतगे उसके प्रेम में जल जल कर भस्म हुए जाते हैं।

आव पतंग निसंक जळ, जळत न मोडो अंग।
पहलै तो दीपक जळै, पीछे जळै पतंग॥

हे पतंग, आओ और नि शक होकर जलो, जलते हुये पीछे न हटो। तुम तो पीछे जलते हो पर दीपक तो पहले से ही जल रहा है।

घर मोरा, वन कुंजरा, आंबा डाळ सूवाह।
सज्जन कुवचण, जलमंघर, वीसरसी मूवाह॥

मोर अपने घरो को, हाथी वनको और शुक आम की डाली को कभी नहीं भूल सकते। अपने लोगो के कहे हुये कुवचन और अपनी जन्म भूमि को इन्सान मरने पर ही भूलता है, कभी नहीं भूल सकता।

'हरण अखाड़ा नह छुटै, जलम भोम मिनखाह ।
हाथी नै विन्ध्याचळो, वीसरसी मूवांह ॥

हिरन जीते जी अपनी आखडी, रात्रि निवास के स्थान को कभी नहीं छोडता । हाथी अपने जन्म स्थान विन्ध्यचल पर्वत को और मनुष्य अपनी जन्म भूमि को मरने पर ही भूलेगा अन्यथा नहीं ।

प्रतीकानुक्रमणिका

	पृष्ठ
अकवर देख अचाणचक	४४
अकवर जासी आप	४२
अगन सोर गज केहरी	१४
अगग्गा सगग्गा नदी वहै	६५
अत्थ जिका दी आपणी	७
अदत्ता केरी अत्थ ज्यूं	५५
अन्त वेर आखीह	५२
अव लग सारा आस	५३
अरटा, घाटा, अमल्ला	११६
अलादीन अकवर तणी	११०
अस लीलो पिव पीयळो	९
आ पडिया मौ जेथ अरि	५६
आग झड़ चसमा महीं	३७
आग लगी वन खड में	१३१
आछा कामा ऊघमो	१२४
आज ऊवेळा उनमियो	६३
आज घरा दिस ऊनम्यो	६७
आज घरा दिस ऊमग्यो	६९
आडावळा अवखी घरा	११६
आता दिसे अरि ऊमग	४९
आभ गडै वीजा अडै	६२
आम फळे परवार सू	१०३
आय सुहागण लाकडी	१२८
आव विदेसी वल्लभा	७६
आव पतग निसक जळ	१३२
आसी सावण मास	६८
इळा न देणी आपणी	३३
इसकी नर घण आदरे	१०३
उजड चालै उतावळो	४५
उदयापुर री कामणी	१११
उदयापुर हजा वसै	१११
उर चौडी कड पातळी,	९३
उर चौडी कड पातळी	९२
उरा थरिन्दा आपणा	४२
उत्तर दिस उपराठिया	८३
ऊजड खेडा फिर वसै	१२५
ऊदा मदतारा तणो	४
ऊभी भी रामागणे	१०३

	पृष्ठ
ऊ आंबा ऊ आमली	११८
ऊ घ न आवै अण जणा	१८
ऊ ची गढ गिरनार	१०१
एक्कर वन वसतडा	१९
एक पखीणी अ ग	६१
एरण खटक्को म्हैं सुण्यो	४६
ओस पडी घर ऊपर	६१
और कछु प्यारो नही	१३१
औरा ने आसाण	५०
अ ग अ ग मद ऊफणै	१०७
आखडिया अणियाळिया	१०६
कटका तवल खुडक्किया	३७
कठण पयोधर लग्गता	२६
कठण जमानो कौल	५३
कद था नाग विसासिया	९३
करडा कुच नू भाखतो	२४
करज कलाळी को कढै	१०२
कल्लो परग्घै आपरी	१२०
कवि घर म्हारी वैनडी	७
कविराजा खेती करो	८
काग उडावण घण चढ़ी	८५
कागज थोडो हित घणो	७९
कागज नही कै मस नही,	७९
काछ द्रढा कर वरसणा	१७
काय उतारी कंकणी	२२
काळी फौल कडाह लै	२२

	पृष्ठ
काळी काजळ सारखी	६६
काळी काठळ वादळी	७०
किताक राखै काळजो	३५
कीधा कौळ न चूकणा	१८
केकाणे काबुल भली	११८
केहर केस भमग मणी	१६
कोई घोडो कोई पुरखडो	६
कोट खिसै देवळ डिगै	५
कोमल राता पातळा	१०७
कौटडियो वाधो कठै	५
कत घरै किम आविया	५६
कथा रण में पैस कै	२१
कथा ऊभा कामणी	१०
कंथ सुपैती देखता	५८
कु जर विघ विसार	१२८
कू जा द्यो न पाखडी	८२
कू पे वाही कोप कर	४०
खग धारा थोडा नरा	११५
खग तो अरिया खोसली	५८
खग वाऊं उळभै घणी	३०
खडग धार पर काह	६०
खमायची रा बाग मे	८५
खाग खणकै सिर फटै	२५
खाटी कुळ री खोवणा	१९
खाता गर्म न खाण	८८
गढ दिल्ली, गढ़ आगरो	१११

	पृष्ठ		पृष्ठ
गिर ऊंचा ऊंचा गढ़ा	१०९	चदा तो किम खड़ियो	७५
गिर पुर देस गमाड़	४३	चूंडा, सगता, मकवणा	११०
गिरद गजा घमसाण	५०	चद उजाळै एक पख	२०
गंगा मच्छ गग्राह	१२०	चिंता मे बुध परखिये	१२५
गंघण कूकी रै गजब	५९	छानै लैले छाक	१०४
गैंवर गळत्थियो	१९	जनम अकारथ ही गयो	१६
घण दीहा विघटी घरा	७१	जळ नदिया वीजां जसा	७०
घण घलिया घमसाण	५०	जळ ऊंडा थळ ऊजळा	११३
घम घम वाग ग्रसागळा	२	जाणै हरिया रूंखडा	१२६
घर ओढ़ण नह गूदडो	१०३	जात वळै न दीहडा	१२५
घर मोरा वन कुंजरां	१३२	जानी वासो मेडते	३९
घर घोडो पिव ग्रचपळो	२३	जाये दासी महल में	८५
घर घोडा ढाळा पटळ	३६	जावो तो वरजा नही	११
घटा बाघ वरसै जसा	६४	जिण भुंय पन्नग पीवणा	११२
घर घर चगी गोरडी	६३	जिण साचै सोरठ घडी	९६
घायल गत घूमैह	५	जिण सूं लाग्यो जोय	९६
घोडा होइजै काठ रा	११२	जिण नैं सुपने देखती	७६
घोडा चढणो सीखिया	२९	जिण विन घडी न जाय	९४
घोचो लाग्या घाव	१२२	जिणी दिसी मौ सज्जण वसह	७४
घूंघट खोळन्दी नहीं	१०६	जीमण भेळै जीमता	३१
च्यारू पासै घण घणो	६१	जीमण पात जठेह	५४
चकवा सारस वाण	९४	जे सासू जणतीह	१२०
चाल घोडा उतावळो	८४	जे तू साहव ना आवियो	६९
चाल सखी उण मदिरे	७३	जोधाणो जस राज रो	११४
चीतरा लकी गौरिया	१०८	जोवन जाता छ गया	९२
चून चुग्यो चढ चूंतरै	३५	जोवन गयो तो जाण दे	८९

	पृष्ठ		पृष्ठ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	११८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	कोई भा[illegible] कोई [illegible]	६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	५८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	८२
[illegible]	१०२	[illegible]	४०
[illegible]	१२०	[illegible]	११५
[illegible]	७	[illegible]	५८
कविराजा [illegible] करो	८	[illegible]	३०
काग उ[illegible]वण [illegible]	८५	[illegible]	६०
कागज थोड़ो हित घणो	७६	[illegible]	८५
कागज नही पं मन नही,	७६	[illegible]	२५
काछ दृढ़ा कर बरसणा	१७	खाटी गुड़ री खोवणा	१६
काय उता[illegible] कामणी	२२	खाता गर्भ न खाण	८८
काळी पील कढाह में	२२	गढ दिल्ली, गढ़ आगरो	१११

	पृष्ठ		पृष्ठ
गिर ऊंचा ऊंचा गढ़ां	१०९	चदा तो किम खड़ियो	७५
गिर पुर देस गमाड़	४३	चूडा, सगता, मकवणा	११०
गिरद गजा घमसाण	५०	चद उजाळै एक पख	२०
गगा मच्छ गघाह	१२०	चिंता में बुध परखिये	१२५
गघण फूकी रै गजब	५९	छानै लैले छाक	१०४
गैवर गळत्थियो	१९	जनम अकारथ ही गयो	१६
घण दीहां विघटी धरा	७१	जळ नदिया वीजां जसा	७०
घण घलिया घमसाण	५०	जळ ऊंडा थळ ऊजळा	११३
घम घम वाग त्रमागळा	२	जाणै हरिया रूखडा	१२६
घर ओढण नह गूदडो	१०३	जात वळै न दीहडा	१२५
घर मोरा वन कुंजरो	१३२	जानी वासो मेडते	३९
घर घोडो पिव अचपळो	२३	जाये दासी महल में	८५
घर घोडा ढाळां पटळ	३६	जावो तो वरजा नही	११
घटा वाघ वरसै जसा	६४	जिण भुय पन्नग पीवणा	११२
घर घर चगी गोरड़ी	६३	जिण साचै सोरठ घडी	९६
घायल गत घूमैंह	५	जिण सूं लाग्यो जोय	९६
घोडा होइजै काठ रा	११२	जिण नै सुपने देखती	७६
घोडा चढणो सीखिया	२९	जिण विन घडी न जाय	९४
घोचो लाग्या घाव	१२२	जिणी दिसी मो सज्जण वसइ	७४
घूंघट खोळन्दी तहीं	१०६	जीमण भेळै जीमता	३१
घ्यारू पासै घण घणो	६१	जीमण पात जठेह	५४
चकवा सारस वाण	९४	जे सासू जणतीह	१२०
चाल घोडा उतावळो	८४	जे तू साहब ना आवियो	६९
चाल सखी उण मदिरे	७३	जोधाणो जस राज रो	
चीतरा लंकी गोरिया	१०८	जोवन जाता छ गया	
चून चुग्यो चढ़ चूंतरै	३५	जोवन गयो तो जाण	

	पृष्ठ		पृष्ठ
[illegible]	४६	[illegible]	७
[illegible]	१०४	[illegible]	१४
[illegible]	३८	[illegible]	१६
[illegible]	१७	[illegible]	३३
[illegible]	१२०	[illegible]	२८
[illegible]	६६	[illegible]	४१
[illegible]	२१	[illegible]	१०४
[illegible]	१४	[illegible]	४४
[illegible]	८०	[illegible]	४०
[illegible]	८१	[illegible]	११
[illegible]	३१	[illegible]	१२७
[illegible]	२६	[illegible]	२२
[illegible]	७४	[illegible]	५२
[illegible]	८६	[illegible]	५२
[illegible]	७२	[illegible]	२४
[illegible] मदुत मन	७४	[illegible]	११४
[illegible]	६४	[illegible]	२५
[illegible]	६५	धन धोरा, जोगा [illegible]	६३
[illegible]	१४	धन पारेवा प्रीत	८७
तीस बरस [illegible]	१०१	धन [illegible]	१०६
तोड प्रीत फिर [illegible]	१३	धन जोबन [illegible]	१२१
तूं छै देसी [illegible]	१०	धव आता आगण [illegible]	३१
		धर [illegible]	६५
थरहर [illegible]	१	धर [illegible] दिन [illegible]	४२
थळ भूरा वन [illegible]	६१	धरता धन [illegible]	५६
थाळ वजता है [illegible]	३४	धक [illegible]	५४
दाडिम फेरे [illegible]	१२	धन जाता, धर पलटता	८

	पृष्ठ		पृष्ठ
मूंछ नाक सिर री मुकट	५५	सजन सिकारा जायसी	७२
मैं परणन्ती परखियो	२६	सजन सिघाया हे सखी	७४
यो आंगण या देहळी	१२८	सज्जण चाल्या हे सखी	७२
यो गहणो यो वेस अब	५७	सत ऊजळ सदेस	६
राजनीति रै रोग सूं	६	सत री सहनाणी चहीं	४४
रात सखी इण ताल में	८२	सपना तू सोभागियो	७८
राहव उट्ठ कमाणगर	४३	समै पलटता जेज नह	१२३
रूड़ो जोवन रंग चुवै	८८	समर चढै काठा चढै	२०
रूळगी रजपूताणियां	६०	समळी और निसंक भख	२४
रोट भट्टके तिण रजी	१०८	समंदर पूछै सफरां	४३
लछमी कर हरि लार	१२२	ससतर विय सूधा रहे	४८
लांगा कुसुम सरीसे वर्ष	१०८	साजन आया हे सखी	८६
लाज पाज दघ लोपियो	८७	साठी चांवळ भैंस दूध	१२७
लीला थारे पाव ने	४३	साण चढै ज्यूं रीस बढै	४८
लूमी झड नदियां लहर	६१	सायर फाट्यो, जळ हट्यो	१२
लोहारी तो पीव रा	२८	साळ बखाणो सिंघ री	११६
सांवै सर पाणी भरै	१०६	साल्ह चलता हे सखी	७४
व्हैं सिघ होफरडीह	३	सावण आयो सायवा	७१
वांढाळी वहतांह	२	सावण आयो सायवा,	
वीणा जन्तर तार	६५	सब वन पागरियाह	६६
वै दीसे असवार	६५	सावण आयो सायबा,	
वै मुनी बक ऊजळा	१२४	मोर हुया महमंत	७०
वै परदेसी वालमा	७३	सावण आयो सायबा,	
सकळ चढावै सीस	५१	पगा विलू बी ग	६१
सरवर हंस मनाय लै	११	सावण आयो स	
सखी तुम्हीणा कन्य नै	२३	वांधो पाग सुरगं	७१

	पृष्ठ		पृष्ठ
सावण लागो सायवा	७१	सोरठ था मे गुण घणा	६८
साहिव श्राया हे सखी	८६	सोरठ नागण हो रही	६७
सिर झुकिया सह साह	५१	सोरठ थू छै बहुगुणी	६७
सीता ना रावण सकी	४४	साची प्रीत सनेह गत	८४
सुख महला नह सोवणो	३८	शकर पूछै लक्षमी	६
सुण समदर सौ योजना	१२	हयळवो तो सू हुयो	४६
सुण वीझा सोरठ कहे	६७	हयळवै री मूठ किण	२७
सुत मरियो हित देस रै	३४	हरण श्रखाडा नह छुटै	१३३
सुत मरियो वगतर पहर	३२	हरणी मन हरियाळिया	६२
सुध हीणा सिरदार	१२१	हळ तो धूना धोरिया	१०
सुपना तोहि मरावसू	७७	हाय जळे श्र गळी जळे	१०१
सुपने मे प्रीतम मिल्या	७६	हाथा मे हथियार	३७
सुपने मे प्रियतम मुझ मिल्या	७७	हाथां परवत तोलता	१२६
सुपनो श्रायो फिर गयो	७८	हाय दई कैसी भई	१३२
सूरो सूतो झाड मे	४७	हित कर जोडे हाथ	१२६
सेजा मे घर घर सखी	२७	हीमत कीमत होय	१२१
सेहणी सव री हूं सखी	५६	हीलोरा दरियाव रा	११
सो गुण वारू देखजे	२०	हुवै मुनी वक ऊजळा	१३०
सोढे श्रमरकोट रे	३८	हे कन्या मत थू करै	१०२
सोरठियो दूहो भलो	१५	हेम कळस कुच जुग हिये	१०५
सोरठ थाने श्रोळख्या	१००	है सिंघणिया श्राज लग	६०
सोरठ उतरी महल सू	१००	हूंतो मोटी श्रास	१२४
सोरठ रग री सावळी	१००	हूंता सखी मो हीवडै	७७
सोरठ सोना रो टको	६६	हूं पाछै श्रागै हुवै	३०
सोरठ साकर री डळी	६६	हूं बलिहारी राणियां	३४
सोरठ तू सुरनार	६८	हूं भाभी डोडी खडी	२६

शुद्धि-पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ
सम्वाधन	सम्वोधन	३
शूरो	शूरो	५
दियी	दियो	७
गाथाओ	गाथाएँ	८
गग्वा	गग्घा	१०
हुटयो	हटयो	१२
कोडा	कोडी	१९
ल्यायाहे	ल्यायोह	२५
जायाहे	जायोह	२५
ढोडी	ढोडी	२९
देई	पेई	३०
अमरकीट	अमरकोट	३८
चनरल	जनरल	४१
घुणिन्दा	घुणिन्दा	४२
राचस्थान	राजस्थान	४३
गीत	जीत	४४
मू ह	मू छ	४५
घर	घर	६३
प्रमात	प्रभात	७२
प्रमियो	प्रेमियो	८३
रात	राव	९१
पक	पंक	१०४

शुद्धि-पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ
सम्वाधन	सम्वोधन	३
शूरो	शूरो	५
दियी	दियो	७
गायाओ	गायाएँ	८
गग्घा	गग्घा	१०
हुटयो	हुटयो	१२
कोडा	कौडी	१९
ल्यायाहे	ल्यायोह	२५
जायाहे	जायोह	२५
ढोढी	ढोढी	२९
देई	पेई	३०
अमरकोट	अमरकोट	३८
घनरल	जनरल	४१
घुणिन्दा	घुणिन्दा	४२
राचस्थान	राजस्थान	४३
गीत	जीत	४४
मू ह	मू छ	४५
घर	घर	६३
प्रमात	प्रभात	७२
प्रमियों	प्रेमियो	८३
रात	राव	९१
पक	पंक	१०४

	पृष्ठ		पृष्ठ
सावण लागो मायवा	७१	गोरठ था में ग्रुण घणा	६८
साहिव ग्राया हे सखी	८६	सोरठ नागण हो रही	६७
सिर झुकिया सह साह	५१	गोरठ थ छै वहुगुणी	६७
सीता ना रावण गकी	४४	साची प्रीत सनेह गत	८४
सुग महला नह गोवणो	३८	शकर पूछै लक्षमी	६
सुण समदर मो योजना	१२	हयळवो तो सू हुयो	४६
सुण वीझा सोरठ कहै	६७	हयळवै री मूठ किण	२७
सुत मरियो हित देस रै	३४	हरण ग्रसाटा नह छुटै	१३१
सुत मरियो वगतर पहर	३२	हरणी मन हरियाळिया	६२
सुध हीणा सिरदार	१२१	हळ तो धुना घोरिया	१०
सुपना तोहि मरावसू	७७	हाथ जळे ग्र गळी जळे	१०१
सुपने मॆ प्रीतम मिल्या	७६	हाथा मे हथियार	३७
सुपने मे प्रियतम मुझ मिल्या	७७	हाथां परवत तोलता	१२६
सुपनो ग्रायो फिर गयो	७८	हाय दई कैसी भई	१३२
सूरो सूतो झाड मे	४७	हित कर जोडे हाथ	१२६
सेजा मे घर घर सखी	२७	हीमत कीमत होय	१२१
सेहणी सव री हूं सखी	५६	हीलोरा दरियाव रा	११
सो ग्रुण वारू देखजे	२०	हुवै मुनी वक ऊजळा	१३०
सोढे ग्रमरकोट रे	३८	हे कन्था मत थू करै	१०२
सोरठियो दूहो भलो	१५	हेम कळस कुच जुग हिये	१०५
सोरठ थाने ग्रोळख्या	१००	हे सिघणिया ग्राज लग	६०
सोरठ उतरी महल सू	१००	हूंतो मोटी ग्रास	१२४
सोरठ रग री सावळी	१००	हूंता सखी मो हीवडै	७७
सोरठ सोना रो टको	६६	हूं पाछै ग्रागै हुवै	३०
सोरठ साकर री डळी	६६	हूं वलिहारी राणिया	३४
सोरठ तू सुरनार	६८	हूं भाभी डोडी खडी	२६

शुद्धि-पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ
सम्वाधन	सम्वोधन	३
शूरो	शूरो	५
दियी	दियो	७
गाथाओ	गाथाएँ	८
गग्वा	गग्घा	१०
हुटयो	हटयो	१२
कौडा	कौडी	१९
ल्यायाहे	ल्यायोह	२५
जायाहे	जायोह	२५
ढोडी	ढोडी	२९
देई	पेई	३०
अमरकीट	अमरकोट	३८
मनरल	जनरल	४१
घुणिन्दा	घुणिन्दा	४२
राचस्थान	राजस्थान	४३
गीत	जीत	४४
मूह	मूछ	४५
घर	घर	६३
प्रमात	प्रभात	७२
प्रमियो	प्रेमियो	८३
रात	राव	९१
	पंक	१०४